

श्रीः ।

भक्तमाला

रामरसिकावली.

निम्को

मिथि श्रीमन्नारायणाविमल महेन्द्राचार्य
 गुण भक्तकुल पुण्यनयन श्रीकृष्णदास
 धिकारी समग्रविनय श्रीमन्नारायण
 सिंहभूदवने परममनोहर कलित सुगम क
 वित्त छंदमवधमं वपनकिया

जिसमें

आदिसं अंतपर्यंत सतयुग, त्रेता, द्वापार, कलियुग
 हरिभक्त संत महर्षीकी कथा चिन्ता पूर्वक वर्णित हैं

वही—हरिभक्तोंके उपकारार्थ

श्री महाराजाधिराज राधाविपनि श्री १०८ श्रीचिच्छेद
 रमणसिद्धदेवजु बहादुरराजों आज्ञानुसार

खेमराज श्रीकृष्णदासने

द्वितीयबार

मुम्बई.

निज " श्रीवेंकटेश्वर " यन्त्रालयमें मुद्रित किया

पौष संवत् १९५२.

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥



दक्षहस्तकृताश्लेषां वामेनालिङ्ग्य राधिकाम् ।
कृतनाट्यो हरिः कुञ्जे पातु वेणुं विनादयन् ॥ १ ॥

प्रस्तावना.

कोटि कोटि धन्यवाद उस सच्चिदानंद आनंदकंदपरब्रह्म, परमेश्वर, सर्व व्यापक, सर्व प्रकाशक, त्रयतापविनाशक, परमात्मा, परमरूप, सुंदरस्वरूप, अखिलवपुनिराकार, साकार, सगुण, निर्गुणकोहैं कि, जिनके स्मरणमात्रसेही यह क्षणभंगी मोहभ्रमसंगी शरीर, जन्म संसारके बंधनसे छूट जाता है जिनकी अपार महिमाका भेद शिव चतुरानन वेदपुराणनेभी नहीं पाया-ऋषि मुनि निरंतरध्यान लगाया, शेष सहस्र फणनसे गाया तबभी एक अंश नहीं पाया जिनका स्वरूप मन बुद्धि इन्द्रियोंसे बाहर है ऐसीप्रभुता और ईश्वरता परभी दयालुता करुणा नम्रता तो ऐसी है कि, निजभक्तोंके दुःख निवारणार्थ साक्षात् अवतारले दुष्ट दनुजोंको मार सुर नर मुनि संत हितकार अपार लीला करते हैं जिनकी अपार लीलाओंकी अपार पुस्तकें इस असारसंसारमें प्रचलितहैं जो बड़े बड़े ऋषीश्वर मुनीश्वर व्यास वशिष्ठ शुकदेवादि महर्षियोंकी भणित हैं उन्हीं का सार उत्तम विचार कलिनर संत हितकार श्रीमन्महाराजाधिराज समरविजयी सर्वविद्या सम्पन्न शूर वंशोद्भव श्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राधिकारी सिद्धिश्रीमहाराजामान्यवरश्रीरघुराजसिंहजी देवने सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुगके सम्पूर्ण हरिभक्तसंतोंकी कथा अत्युत्तम परम मनोहर रमणीक सरल कवित्त दोहा, चौपाई, छंद, सोरठा, छप्पय इत्यादिछंद प्रबंधसे बनाया जो स्रूहस्थ हरिभक्त साधु महात्माओंने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर अनंत सुखको भोग परमपदके भागी हुये इस बार छपनेमें औरभी रोचक कथा बढाई गई हैं जिसमें अनेक साधु महात्माओंके परमपावन सुभग चरित्र विस्तारपूर्वक लिखे गयेहैं नाम उसका उत्तर चरित्रहै यह कविता ऐसी मनभावन परमसुहावन पावन है कि जिसने एकवार इसमें गोतालगाया इस संसारमें अत्यंत सुखउठाया और अंतको उन्हीं श्रीसच्चिदानंद आनंदकंदके कृपाकटाक्षसे परमपदको सिधायी ।

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.

अथ भक्तमालाकी अनुक्रमणिका.

सत्ययुगखण्ड.

अध्याय.	विषय.	पृष्ठ.	अध्याय.	विषय.	पृष्ठ.
१	मंगलाचरणम्	१	२५	सत्यव्रतकी कथा	६५
२	ग्रंथस्तुति	२	२६	रहुगणकी कथा	६६
३	ग्रंथाऽशीर्वाद	३	२७	ऋभुकी कथा	६७
४	ग्रंथारम्भ वन्दना	४	२८	इक्ष्वाकुराजाकी कथा	६८
५	भागवतको कृष्णरूपवर्णन	१२	२९	पुरूरवाकी कथा	६९
६	रामरसिकावलीग्रंथकेनियम	२१	३०	गयराजाकी कथा	६९
अथ सत्ययुगके भक्तोंकी कथा.			३१	देवल उत्तक और हरिदास- की कथा	७०
२	सत्ययुगखण्डब्रह्मचरित्रवर्णन	२२	३२	नहुषराजाकी कथा	७१
३	नारदकी कथा	२५	३३	मान्धाताकी कथा	७२
४	शिवजीकी कथा	३२	३४	पिप्पलायनकी कथा	७३
५	सनक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमारकी कथा	३२	३५	सगरकी कथा	७४
६	कपिलदेवकी कथा	३३	३६	वशिष्ठऋषिकी कथा	७५
७	मनुराजकी कथा	३४	३७	भृगुऋषिकी कथा	७६
८	प्रह्लादभक्तकी कथा	३६	३८	दालभ्यमुनिकी कथा	७७
९	यमराजकी कथा	४५	३९	उत्तानपादराजाकी कथा	७८
१०	कृष्णकेजयविजयपार्षदोंकी कथा	४५	४०	दक्षकी कथा	७९
११	श्रीलक्ष्मीजीकी कथा	४७	४१	सौभरिकी कथा	८०
१२	गरुडजीकी कथा	४८	४२	कर्दमकी कथा	८१
१३	ध्रुवजीकी कथा	४९	४३	मांडव्यमुनिकी कथा	८२
१४	चित्रकेतुकी कथा	५६	४४	पृथुमहाराजाकी कथा	८३
१५	निमिराजकी कथा	५८	४५	गजेंद्रअसुराहकी कथा	८४
१६	नवयोगेश्वरकी कथा	५९	४६	अंबरीष राजाकी कथा	८५
१७	अंगराजाकी कथा	६०	४७	रंतिदेवराजाकी कथा	८६
१८	प्रियव्रतराजाकी कथा	६१	४८	रुक्मांगदराजाकी कथा	८७
१९	शेष महाराजकी कथा	६१	४९	हरिश्चन्द्रनरेशकी कथा	८८
२०	दक्षकेपुत्र प्रचेतनकी कथा	६२	५०	शिविराजाकी कथा	८९
२१	शतरूपाकी कथा	६३	५१	दधीचिऋषिकी कथा	९०
२२	देवहूतीकी कथा	६४	५२	मंदालसाकी कथा	९१
२३	सुनीतिकी कथा	६५	५३	जड़भरतकी कथा	९२
२४	प्राचीनवर्द्धिकी कथा	६५	५४	अजामिलकी कथा	९३
			इति सत्ययुगखण्डः समाप्तः		

अध्याय.	विषय.	पृष्ठ.	अध्याय.	विषय.	पृष्ठ.
---------	-------	--------	---------	-------	--------

अथ त्रेतायुगखण्ड प्रारंभः

१	हनुमानजीकी कथा	१२१
२	जाम्बवानकी कथा	१२४
३	सुग्रीवकी कथा	१२५
४	विभीषणकी कथा	१२६
५	शबरीकी कथा	१२८
६	जटायुकी कथा	१३६
७	जनककी कथा	१३७
८	गांधीकी कथा	१४२
९	रघुराजाकी कथा	"
१०	दिलीपराजाकी कथा	१४४
११	निषादकी कथा	१४५
१२	भरद्वाज मुनिकी कथा	१४७
१३	वाल्मीकिकी कथा	१४८
१४	अत्रिऋषिकी कथा	१६०
१५	शरभंगऋषिकी कथा	१६१
१६	सुतीक्ष्णकी कथा	१६२
१७	सुदर्शनऋषिकी कथा	"
१८	अगस्त्यऋषिकी कथा	१६३
१९	शृंगीऋषिकी कथा	१६५
२०	विश्वामित्रऋषिकी कथा	१६८
२१	गौतमऋषिकी कथा	१७२
२२	सुमंतादिकनकी कथा	१७३

इति त्रेतायुगखण्डः संपूर्णः ।

अथ द्वापरयुगखण्डप्रारंभः ।

इक्ष्वाकुके भक्तोंकी कथा ।

१	शुकदेवजीकी कथा	१७६
२	राजापरीक्षितकी कथा	१८६
३	भीष्मकी कथा	१८८
४	क्षत्ताकी कथा ...	२०५
५	दानपतिकी कथा	२१०
६	सुदामाकी कथा	२२४
७	मैत्रेयकी कथा	२३५
८	शौनककी कथा	२३७
९	सूतकी कथा	२३८
१०	मुञ्जुकुंदकी कथा	२४०

११	कृपाचार्यकी कथा	२४२
१२	द्रोणाचार्यकी कथा	२४४
१३	राजसूययज्ञकी कथा	२४६
१४	यज्ञश्रुतियोंकी कथा	२६२
१५	संजयकी कथा	२७०
१६	दुर्वासाकी कथा	२७२
१७	श्रुतदेवऔर बहुलाश्वकी कथा	२७३
१८	व्यासदेवकी कथा	२७९
१९	नंदादिगोपनकी कथा	२८०
२०	उद्धवकी कथा	२८१
२१	घंटाकर्णकी कथा	२८३
२२	श्वेतद्वीपवासिनकी कथा	३०४
२३	कुंतीकी कथा	३०६
२४	पांडवकी कथा	३०८
२५	द्रौपदीकी कथा	३१२
२६	जनार्दनब्राह्मणकी कथा	३२६
२७	सुरथसुधन्वाकी कथा	३७८
२८	नीलराजाकी कथा	३९४
२९	मोरध्वज अरु ताम्रध्वजकी कथा	३९५
३०	चन्द्रहासराजाकी कथा	४०५

इति द्वापरयुगखण्डः समाप्तः ।

अथ

कलियुगखण्ड पूर्वार्द्धप्रारंभः ।

चंदना ।

१	भक्तभूतकी कथा	४२०
२	भक्तिसार और कनिकृष्णकी कथा	४२२
३	शठकोपकी कथा	४३२
४	कुलशेखरमहिपालकी कथा	४३४
५	विष्णुचित्तकी कथा	४४०
६	अंधिराजकी कथा	४४४
७	चोलमहीपकी कथा	४५०
८	योगिवाहकी कथा	४५१
९	भक्तवरकालकी कथा	४५२
१०	गोदाअंबाकी कथा	४५९

अध्याय.	विषय.	पृष्ठ.	अध्याय.	विषय.	पृष्ठ.
११	श्रीरामानुजकी कथा	४७५	१८	पयहार्गजीकी कथा	६३३
१२	दाशरथि अरु कूरेशकी कथा ४७६		१९	कीन्ददासकी कथा	६३६
१३	दाशरथि अरु कूरेशकी कथा- न्तर्गत प्रपन्नामृतकी कथा ५१४		२०	अग्रदासकी कथा	६३८
१४	प्रपन्नामृतकथांतर गोविंदाचार्य और शैलपूर्णकी कथा ५२८		२१	प्रियादासकी कथा	६३४
१५	प्रपन्नामृत तथा धनुदासकी कथा ५४१		२२	केवटदासकी कथा	६३६
१६	प्रपन्नामृत तथा शहिजादीकी कथा ५५७		२३	चरणदासकी कथा	६३७
१७	कबरूकी कथा ५६२		२४	हरिदासकी कथा	"
१८	रामानुजाष्टोत्तरशतनामवर्णन ५७२		२५	नारायणदासकी कथा	६३८
१९	प्रपन्नामृत कथांतर अंधपूर्णकी कथा ५७५		२६	सूरदासकी कथा	६३९
२०	प्रपन्नामृत कथांतर अनंतकी कथा ५७६		२७	रंगदासकी कथा	६४०
इतिकलियुगखंडपूर्वार्द्धसमाप्तः			२८	षोडशभक्तकी कथा	"
अथ कलियुगखण्ड उत्तरार्द्धः			२९	नामदेवकी कथा ...	६४२
प्रारंभ ।			३०	जयदेवकी कथा	६४१
१	विष्णुस्वामीकी कथा	६०३	३१	श्रीधरस्वामीकी कथा	६६४
२	मध्वाचार्यकी कथा	६०५	३२	श्रीसूरदासकी कथा	६६७
३	श्रीनिवाकस्वामीकी कथा ...	६०६	३३	ज्ञानदेवकी कथा	६७५
४	श्रुतप्रज्ञकी कथा	६०७	३४	वल्लभाचार्यकी कथा	६७७
५	श्रुतदेवकी कथा	६०९	३५	शंकराचार्यकी कथा	६७९
६	श्रुतिउदधिकी कथा	६१०	३६	कोईएकभक्तकी कथा	६८०
७	श्रुतिधामकी कथा	६१२	३७	सिंहकिशोरकी कथा	६८२
८	लालाचार्यकी कथा	६१३	३८	पुरुषोत्तमक्षेत्रकेराजाकी कथा ६८५	
९	गुरुचैलाकी कथा	६१५	३९	कर्मावाईकी कथा	६८७
१०	देवाचार्यकी कथा	६१६	४०	मामाभैनेकी कथा	६९१
११	हरियानंदकी कथा	६१७	४१	हंसहंसिनीकी कथा	६९५
१२	राघवानंदकी कथा	६१७	४२	भुवनसिंहकी कथा	६९८
१३	रामानंदकी कथा	११८	४३	देवापंडाकी कथा	७०२
१४	अनंतानंदकी कथा	६२०	४४	कमधुजकी कथा	७०४
१५	नरहरिदासकी कथा	६२१	४५	जैमिलराजाकी कथा	७०७
१६	भावानंदकी कथा	६२२	४६	साखीगोपालकी कथा ...	७०९
१७	रामदास और सारीदासकी कथा	"	४७	वारमुखीकी कथा	७१२
			४८	रैदासकी कथा	७१६
			४९	कबीरजीकी कथा	७२३
			५०	सेनानापितकी कथा	७२८
			५१	धनाजाटकी कथा	७४१
			५२	पीपाकी कथा	७४३
			५३	सुखानंदकी कथा	७६१
			५४	केशवभट्टकी कथा	७६२
			५५	व्यासकी कथा	७६४
			५६	माधवदासकी कथा	७६५

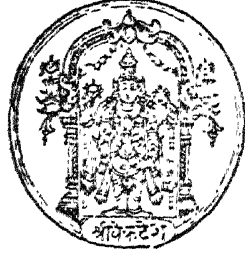
अध्यायः	विषयः	पृष्ठः	अध्यायः	विषयः	पृष्ठः
५७	व्यासदासकी कथा....	७६९	९४	अल्हभक्तकी कथा	८८६
५८	सुरारिदासकी कथा	७७३	९५	हरिभक्त ब्राह्मणकी कथा	८८७
५९	हरिवंशकी कथा	७७५	९६	एकनृपतिकी कथा	८८९
६०	हरिदासकी कथा	७७६	९७	अंतर्निष्ठभूषकी कथा	८९०
६१	तुलशादासजीकी कथा	८८२	९८	गुरुभक्तकी कथा	८९१
६२	रामदासकी कथा	८०५	९९	सुरसुरानंदकी कथा	८९२
६३	आशकर्मकी कथा	८०७	१००	सुरसुरीकी कथा	८९३
६४	नरवाहनराजाकी कथा	८०८	१०१	नरहरियानंदकी कथा	८९४
६५	चतुर्भुजदासकी कथा	८०८	१०२	पद्मनाभजीकी कथा....	८९७
६६	अंगदसिंहकी कथा	८१२	१०३	तत्वाजीवाकी कथा....	८९९
६७	चतुर्भुजकी कथा	८१५	१०४	श्री रघुनाथगोसाईकी कथा	९०२
६८	पृथ्वीराजकी कथा	८१८	१०५	नित्यानंदकी कथा	९०३
६९	मधुकरसाहकी कथा	८२०	१०६	कृष्णचैतन्यकी कथा	९०४
७०	रामराजाकी कथा	८२१	१०७	सूरदासकी कथा	९०५
७१	रामराजाके रानीकी कथा....	८२२	१०८	परमानंदकी कथा	९०७
७२	कूवाजीकी कथा	”	१०९	श्रीभट्टकी कथा	९०८
७३	करमैतीकी कथा	८२४	११०	विठ्ठलदास और इनके सात पुत्रनकी कथा	९०९
७४	उभयकुमारिनकी कथा ...	८२६	१११	कृष्णदासकी कथा	९१०
७५	एकराजकन्याकी कथा	८२९	११२	माधुरविठ्ठलदासकी कथा	९१३
७६	दयाबाईकी कथा	८३०	११३	संतहरिनामकी कथा	९१५
७७	गंगाबाईकी कथा	८३१	११४	कमलाकरभट्टकी कथा	९१६
७८	एकरानीकी कथा	८३२	११५	नारायणदासकी कथा	९१७
७९	हरिपालकी कथा	८३३	११६	रूपसनातनकी कथा	”
८०	नंददासकी कथा	८३५	११७	जीवगोसाईकी कथा ...	९२०
८१	जगतसिंहकी कथा	८३६	११८	अलिभगवानकी कथा	९२१
८२	सदाव्रतीकी कथा	८३७	११९	गोपालभट्टकी कथा....	”
८३	प्रेमीनिधिवर्णिककी कथा	८३९	१२०	विठ्ठलविपुलकी कथा	९२२
८४	रत्नावतीकी कथा ...	८४१	१२१	जगन्नाथकी कथा	९२३
८५	त्रिपुरदासकी कथा....	८४५	१२२	लोकनाथजीकी कथा	९२४
८६	सदनकसाईकी कथा	८४७	१२३	मधुगोसाईकी कथा....	”
८७	नरसीमेहताकी कथा	८५१	१२४	रांकाबांकाकी कथा....	९२६
८८	मीराबाईकी कथा	८६०	१२५	खोजाजीकी कथा	९२८
८९	गोस्वामिकी कथा	८७९	१२६	लडूभक्तकी कथा	९२९
९०	तिलोचनदासकी कथा	८८१	१२७	संतभक्तकी कथा	९३०
९१	अनुकरणकी कथा	८८४	१२८	तिलोकसोनारकी कथा	९३१
९२	रतिवतीबाईकी कथा	८८५	१२९	प्रतापरुद्रकी कथा	९३३
९३	जसुस्वामीकी कथा....	८८६	१३०	गोविंदस्वामीकी कथा	”

अनुक्रमणिका ।

अध्याय.	विषय.	पृष्ठ.	अध्याय.	विषय.	पृष्ठ.
१३१	गंगामालीकी कथा.....	१३५	१३	मंगलदासकी कथा
१३२	गणेशदेईकी कथा	१३६	१३	रामदासकी कथा	१०३४
१३३	भक्तगोपालकी कथा	१३७	१४	अनंतदासकी कथा	१०३५
१३४	लाखानामकी कथा.....	१३८	१५	तृतीय रामदासकी कथा	१०३६
१३५	सूरमदनमोहनकी कथा	१४०	१६	रामसेवककी कथा	१०३८
१३६	सुरारिदासकी कथा	१४२	१७	तुळारामकी कथा	१०३९
१३७	तुंबुरुद्विजकी कथा	१४४	१८	गोपीचरणकी कथा	१०४०
१३८	यशवंतकी कथा	१४५	१९	श्रीकृष्णदासकी कथा
१३९	वणिकहरिदासकी कथा	१४६	२०	चतुरदासकी कथा.....	१०४४
१४०	कईएकभक्तनकी कथा	१४७	२१	वेदांताचार्यकी कथा	१०४५
			२२	हिम्मतदासकी कथा	१०४६
			२३	पवंतदासकी कथा	१०४७
			२४	ब्रह्मचारीकी कथा	१०४१
			२५	भगवानदासकी कथा	१०४३
			२६	कृष्णदासकी कथा	१०४६
			२७	रामसखेका चरित्र	१०४९
			२८	रघुनाथदास तथा रामदास तथा प्रेमसखी तथा घनश्या- मदास तथा नागाबाबादिकी कथा	१०५३
			२९	छीतूदासकी कथा	१०६६
				अथ	
				वघेलवंशवर्णन आगमनिर्देश	
				ग्रंथ प्रारंभः ।	
				१ वघेलवंश वर्णन.	१०८०

इति रामरसिकावली नाम भक्तमालाकी अनुक्रमणिका
संपूर्णा.

श्रीविष्णुदेवगय नमः ।



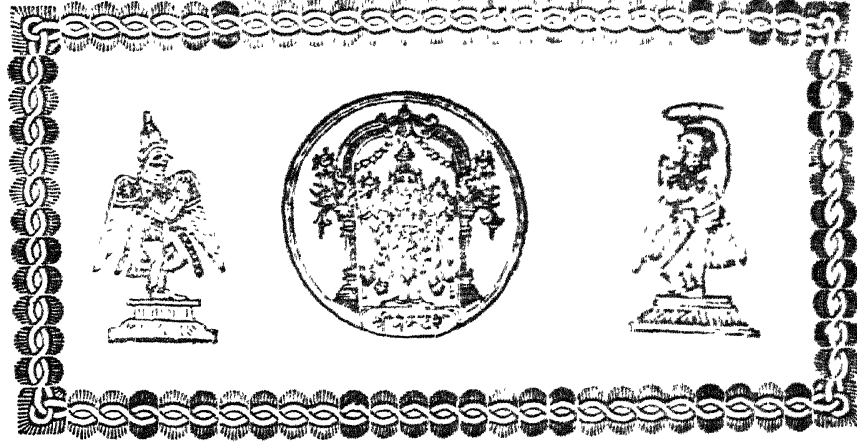
भक्तमालान्तर्गत भगवद्भक्तोंकी संख्या ।

नाम युग	संख्या भक्त	
सत्ययुग	५४	इन भक्तोंके सिवाय और भी अनेक भक्तोंकी सूक्ष्म कथा हैं ।
त्रेतायुग	२२	
द्वापर युग	३०	
कलि युग पूर्वार्ध	२०	
” उत्तरार्ध	१४०	
उत्तरचरित्र के भक्त और वघेल वंश वर्णना न्तर्गत अनेक कथा हैं	२९	

इति भक्तमालान्तर्गत भगवद्भक्तोंकी संख्या समाप्तम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
“श्रीविष्णुदेव” छापाखाना
मुंबई.

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।



श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमहाराज रघुराजसिंहदेवजूवहादुरकृत-

भक्तमाला ।

अर्थात्

रामरसिकावली ॥

मंगलाचरण ।

श्लोकः—नमो नलिननेत्रायवेणुवाद्यविनोदिने ॥
राधाधरसुधापानशालिने वनमालिने ॥ १ ॥
नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने ॥
वासुदेवाय कृष्णाय सात्वतां पतये नमः ॥ २ ॥

स्वच्छंदोपात्तदेहायविशुद्धज्ञानमूर्तये ॥

सर्वस्मै सर्वबीजाय सर्वभूतात्मने नमः ॥ ३ ॥

कवित्त-महाराजजयसिंह जयमें सिंहके समान निरयान समय
जासु गंग लीन्ही अगवान ॥ तासु तनय विश्वनाथ महाराजविश्व
नाथसम सीयनाथ को अनन्य साँचो भक्तिमान ॥ ज्ञानवानगु-
णवानयशवानधर्मवान जाहिर प्रतापवान भोन सरि जाके आन ॥
तासु पूतमहाराज रघुराज मृगराज कहै युगलेशभो सवाई
ताहुते जहान ॥

दोहा-यशप्रतापमंदिरकरचो, विश्वनाथमहराज ॥

तापर कलसा ताहिको, धरचो भूप रघुराज ॥ १ ॥

रच्यो रामरसिकावली, सोचौखंड विराज ॥

सतयुग त्रेता द्वापरौ, औकलिखंड दराज ॥ २ ॥

पूर्वारध उत्रारधै, जानलेउ कलिखंड ॥

तामें आचारिन कथा, नाभाकृत उदंड ॥ ३ ॥

औरएक उत्तरचरित, कथाभक्त यहिकाल ॥

रहेसांधु सेवी बड़े, लहेदरश रघुलाल ॥ ४ ॥

श्रीकबीर भाषितअरु, जोआगम निरदेश ॥

ग्रंथरच्यो युगलेशसो, जामें कथा नरेश ॥ ५ ॥

ग्रंथस्तुति ।

कवित्तवनाक्षरी-जप तप नेम व्रत संयमअचारबहु चाहैकरैएको
नाहिबेदलेबतावहीं ॥ तीरथअनेकमुक्तिदाताहै विख्यातजगआ
लसीजेकबहुंनतिनमेंसिधावहीं ॥ ज्ञानतेविहीनवेशभक्तिकोनलेश
जिन्हैं साँचीयुगलेशयहसबकोसुनावहीं ॥ रामरसिकावलीया पढ़ै
सुनैआठौंयामविनश्रमरामनिजधामकोपठावहीं ॥

छप्पय—जगत विषयसुख विषयमानि विषयी नहिंन्यागें ॥
 परम अभागे कवहुँ सीख संनन नहिं पागें ॥
 महापातकी जेउ करत पानक महि वागें ॥
 हरि हरिजन जहँ कथा होइ नहँ ते उठि भागें ॥
 तेकवहुँ रामरसिकावली पढ़ेंमुन जो भाग्य वश ॥
 युगलेशते ह्वै करि शुद्धमन वसैं परेस निवेशलसि ॥

ग्रंथाशीर्वाद ।

सवैया—भूधरधारनकीन्हे धरा औधराकोधरे सरसों समशेपहें ॥
 शेषकोकच्छपकोलधरे अरु लोमशआयुपजौलौविशेपहें ॥
 वेषसुरापगाधारहै जौलगि जौलौअकाश निशेशदिनेशहें ॥
 तौलौनरेश कथाको प्रचार हमेशरहैं करतौ युगलेशहें ॥

इति मंगलाचरणम् ।

अथ ग्रंथारम्भः ।

सोरठा—जयवसुदेव कुमार, मनवच इंद्रियकर्मपर ॥
 सबसंतनआधार, अतिकोमलकरुणायतन ॥ १ ॥
 हरवरहरतखँभार, निजशरणागतजननको ॥
 भाषतअहौं तुम्हार, करतअभय संसारते ॥ २ ॥
 जानतजोनहिआहि, ताहिजनावतउरप्रविशि ॥
 जानेदेत निबाहि, कोकृपालु यदुनाथसम ॥ ३ ॥
 यहजगमें द्वैसार, भगत औरहू भागवत ॥
 बिनभागवतविचार, मिलतनभगवतपदकतहुँ ॥ ४ ॥
 जयजयसंतसमाज, जेहिसेवतसुधरतसकल ॥

शरणपरचो रघुराज, लाज तिहारे हाथहै ॥ ५ ॥

शारदचनइवज्योति, जयजयमातुसरस्वती ॥

जाहिकृपातवहोति, सोइउतरतकविताजलधि ॥ ६ ॥

स०—जानौंनहींकछुछंदनकीगतिसाजसाहित्यकीऔरनचीन्ह्यो ॥

.न्यायव्याकरणादिकशास्त्रनहींइनमेंकबहुँमनदीन्ह्यो ॥

तेरेभरोसभरोजगदंवकछूरचनागतिहो गहिछीन्ह्यो ॥

हैअवतोहिंसँभारसवैरघुराजकेलाजको रक्षनकीन्ह्यो ॥

दोहा—सहसवयालिसग्रंथजो, आनँदअंबुधिनाम ॥

मोरसनामें बैठिकै, कियोमातु मतिधाम ॥ ७ ॥

तथारामरसिकावली, चहौंचरणतोहिंध्याइ ॥

मोरसनामें बैठिकै, दीजै मातु बनाइ ॥ ८ ॥

छप्पय—विघनहरन जनशरन धरनसुख दरनदरिद्रन ॥

नरन करन आभरन ज्ञानत्रैवरनहु शूद्रन ॥

हरन सकल भवभीति जगतपूरण संचारन ॥

करुणाटरन अपारसुदासन विपति विदारन ॥

तनुश्वेतवरनमतिछतिछरनश्रेयघरनतारनतरन ॥

रघुराजयुगलवंदितचरनजयगजमुखअशरनशरन ॥

सोरठ—तुमहिंसुभिरिसवकाज, सिद्धिहोतसुकवीनके ॥

रचतकछुकरघुराज, विघन विगरपूरणकरहु ॥ ९ ॥

चौ०—सत्यवती सुत चरणमनाऊं । जेहिप्रसादसुंदरमतिपाऊं ॥

जो वेदन विभाग विस्तारा । अष्टादश पुराण करतारा ॥

वंदौं तासु सुवनपद कंजन । जो विरागभाविक मनरंजन ॥

लिहेहुं सकलजगमाँहि निहारी । नहिंदीसत शुकसमउपकारी ॥

परम धर्म मर्यादा राखत । को भागवत भूपसों भाखत ॥

यदापि सप्तदश सुखद पुराणा । औरहु भारत लक्षप्रमाणा ॥

क्रीन्द्यो व्यासदेवमनिगानी । पैगहिं नृपकी गई गलानी ॥
जव भागवत कियो निर्माता । तव पायो नीमोद महाना ॥
वंदौ वाल्मीकि सुनिचरना । रामरसिक उग आनंद भरना ॥
भन्यो जो चौविससहस्ररामयश । जन्महरणमियनिधनपदतइश ॥
कोमल पद प्रसाद गुणतामें । अर्थ गँभीरव्यंग्य बहु जानें ॥
रघुपतिभक्त शिरोमणिज्ञाता । कविनसुमनिदायक अवदाता ॥

दोहा—नमोसुतीक्ष्णचरण में, रामभक्तिआधार ॥

अपनेतेजिनकोमिले, कोशलनाथकुमार ॥ १० ॥

अव वंदौ दशरथ महाराजा । उदित भानुकुलभानुदराजा ॥
वंदौ अवधपुरी अतिपावनि । रामरसिक अतिआनंदछावनि ॥
वंदौ सरयूसरित सुहावनि । जासुवानि यशराममिलावनि ॥
वंदौ अवध प्रजा सुखबोरे । रामचंद्र सुखचारु चकोरे ॥
वंदौ कौशल्या महारानी । राम इंदुदिशि इंदुसमानी ॥
नमो कैकयी पद बहु वारन । भै भूभार हरण को कारन ॥
वंदौ लपण शत्रुहनमाता । सुतनसहितजनुभक्तिविख्याता ॥
वंदौ त्रिशत पचासहु रानी । नेह अर्थ हरि श्रुतिसम जानी ॥
वंदौ भरत चरण सुखदायक । राम सनेह जौन्ह निशिनायक ॥
वंदौ लपण हरण अवसेरू । रामचरण सेवन महिमेरू ॥
नमो शत्रुसूदन छविछाजा । रामरसिक गृहमधि ग्रहशंजा ॥
मारुति नमोजोरि कर दोई । रामश्यामवन चातक जोई ॥

दोहा—वंदौकपिनायकचरण, रामसखाबलवान ॥

सीताशोकसमुद्रको, रघुपतिसेतुसमान ॥ ११ ॥

अज्ञ विमोचन नमो विभीषण । रामविजयवनवनअसदीखन ॥
वंदौ मंदर वालि कुमारा । दवे असुर अरि जेहि बलभारा ॥
नमोसकलकपिमथिरणसागर । प्रगत्योहरियशसुधाउजागर ॥

अब वंदौ वसिष्ठ करजोरी । मति साठी रघुवर रँगवोरी ॥
 वंदौ गृही अगस्त्य ललामा । जिनके अतिथिभये श्रीरामा ॥
 वंदौ विश्वामित्र मुनीशां । राम शस्त्रप्रद रत्न नदीशा ॥
 वंदौ अत्रि और अनुसूया । हरिपदपंकज अलिविन सूया ॥
 जयशरभंग सुमति बड़भागा । दरशि रामरवि तमतनुत्यागा ॥
 वंदौ गीध सुमति सुखदेनी । रामकाज तनुतज्यो त्रिवेनी ॥
 वंदौ शबरी प्रीति अभंगा । राम सुरति जलराशि तरंगा ॥
 वंदौ गुह निषाद मतिवाना । राम दीनहित वेदप्रमाना ॥
 वंदौ ऋषितिय आयसु आसू । रामचरणरज पारस जासू ॥

दोहा-वंदौ विदित विदेह पद, सीतासुरतिसोहाइ ॥

महिमानस ते प्रगाटिकै, लगी रामतन जाइ ॥ १२ ॥

प्रगटीमिथिला मानसर, मिलीलषणनिधिनीर ॥

जयजय सरयू उर्मिला, हरिणिहारभवभीर ॥ १३ ॥

वंदौ माता मांडवी, श्रुति कीरति सहुलास ॥

मनुनिष्ठारतिदोउलसै, सांतदास रसपास ॥ १४ ॥

वंदौ कुमुद जनक पुरवासी । रघुपति राकापतिहि उपासी ॥

वंदौ चरण जनकदुहिताके । कहि न जात गुणजासु कृपाके ॥

मिथिलामंजुल वाग सोहायो । बीजदेव कारजमहि आयो ॥

जनक सुकृत अंकुरशुचिजयऊ । लहि सेवन जलबाढ़त भयऊ ॥

सुछाविसुपल्लव भये अनेका । लगेकरुन गुण कुसुम विवेका ॥

धनुषभंग प्रणमांडवरोपी । माली मिथिलाधिप अतिचोपी ॥

दशरथ लालन मालहिपाई । दियतनया लतिका लपटाई ॥

वंदौ रघुपति चरण सरोजू । जेहि भरोसमोहिंवाढ़तरोजू ॥

मुनि मनमानस मंजुमराला । मंडनहिय महेश मणिमाला ॥

सुरसरिमौलिरतनउडुगणके । द्युतिदायक मयंकक्षणक्षणके ॥

संसृत सागर पारक पोतू । विधि उरनींद निवास कंपोतू ॥
दुखदारिद दावानल मेहू । वर्द्धक विधुवार्गविजन नेहू ॥
दोहा—मुनिनमनोरथकामतरु, मनुजनमालवदेश ॥

मदमत्सरमातंगके, मर्दनमहामृगेश ॥ १५ ॥

वंदौ रामनाम अरु धामा । लीलारूप जगत प्रदकामा ॥
द्वै अक्षर सब अक्षरराई । जपत जीव मिस श्वाससदाई ॥
लायक सज्जन सदा नेहके । नयन सरिस दोउ मनुजदेहके ॥
वस्तु प्रकाशक तीनिधामके । रविशशिसम युगवरणरामके ॥
कारजकारकजगनिशिदिनसे । उष्णदुरित हर शशी तुहिनसे ॥
जियजानकिभवविपिनसहायक । जैसे सदा लपण रघुनायक ॥
मनुवसुदेव विमोह कंससे । मोचक माधव दुविदध्वंससे ॥
उरसरसुख जलपूरक कैसे । मास सुसावन भादँव जैसे ॥
स्यंदननेम निदाहक सोई । चक्रसरिस वर आखर दोई ॥
परम धरम तनकृत व्यापारू । युग करसम युग वरण उदारू ॥
श्रीपति संत परमप्रिय कैसे । चतुरानन पंचानन जैसे ॥
मोहिअतिहितकरनितपारायण । जिमिभागवत और रामायण ॥

दोहा—अववंदौसाकेतपुर, जेहिसम दुतिय न कोय ॥

जहँविलसतरघुवरसिया, नितमुदमंगलमोय ॥ १६ ॥

अवध और अपराजिता, सांतानक साकेत ॥

नामअयोध्याकेसकल, वरणहिबुद्धिनिकेत ॥ १७ ॥

एक अंश विरजा यहिवारा । तामें है ब्रह्मांड अपारा ॥
विरजा पार उतै सुखराशी । तीनिपादथल परम प्रकाशी ॥
एक दिशा वैकुंठ सुहावन । एकदिशा साकेतहु पावन ॥
एकदिशा गोलोक विराजा । यहिविधिहरिपुर और दराजा ॥
मत्स्य कूर्म आदिक प्रभुकेरे । विपुलधाम अभिराम घनेरे ॥

नारायण सुंदर भुजचारी । वसहि विकुंठाहिं सदा मुरारी ॥
 तिमि गोलोक कृष्णप्रभुराजै । सकलसखनयुत सबसुखसाजै ॥
 तिमि साकेतनगर श्रीरामा । विलसाहिं सियासहित सुखधामा ॥
 तहँ प्रमोदवन परमसुहावन । करहिंविहार सदा मनभावन ॥
 उत्तर दिशि सरयू सरि सोहै । रामकृपा लहि जेहि जन जोहै ॥
 सज्जन रघुपतिरूप उपासी । वसहिं नगर नित आनँदरासी ॥
 कहि न सकत छवि वदन हजारा । तौकिमि कहि पाऊँ मैं पारा ॥
 दोहा—अववंदौप्रभुरूपको, करिन्योछावरकाम ॥

युगुलबाहुषोडशवयस, सुंदरतनुवनश्याम ॥ १८ ॥
 जो वरनो उपमा जगहेरी । तौ जानौ जड़ता हठिमेरी ॥
 जन्मअनेकनतपवन कीन्हें । कबहुँ न स्वाद कामकर चीन्हें ॥
 विषय विलोपकसाधनसाधे । यहि हित अवशि ईश अवराधे ॥
 ज्ञान विराग योगमहँ पूरे । रसगाथा निशिदिन हिय झूरे ॥
 ऐसे मुनि दंडक वनवासी । लखि रघुपति सरूप छविरासी ॥
 करीविहारकरनअभिलाखा । नेकहु धीरज रहा न राखा ॥
 गुनिमुनिभनप्रभुदियोनियोगू । यहि अवतार विहार अयोगू ॥
 लहिहैं हम यदुकुलअवतारा । तब गोपी ह्वै कियो विहारा ॥
 पुनिमानुषआमिषआहारिनि । अतिशयवृद्धकरालविकारिनि ॥
 आई भक्षण हित अपनेते । कबहुँन नेह जान सपनेते ॥
 सो रावण भगिनी शूर्पणखा । हिंसातरु प्रगटनि नितकुनखा ॥
 निरखि मनोहर रघुवर रूपा । अपनो नायक होन निरूपा ॥

दोहा—असअनूपप्रभुरूपको, मैं वरणो केहिभाँति ॥

जिहिवरणतसुकविनगये, अबलोंवहुदिनराति ॥ १९ ॥

रघुवरकी लीलाललित, मैं वंदौ शिरनाय ॥

जेहिगावतगोपदसरिस, जनभवनिधिलँघिजाय ॥ २० ॥

सोउवर्णत कोउलह्यो न पारा । विधिशारदशिव शीशइनाग ॥
 वालमीकिमुनिजगकविचोटी । रामचरित वरण्यो जनकोटी ॥
 और देवपुर आदिक गयऊ । चौविंस सहस रहनमहिभयऊ ॥
 सोइ रामायण अधम उधारा । रघुपति रूप रसिक आधारा ॥
 उक्ति युक्ति बहुतुंगतरंगा । भरचो रामयश छोरअभंग ॥
 रामरसिक चकवाक मराला । निवसहि तटकरि पानरसाळा ॥
 अर्थ अनूप अनेकनिभांती । विलसहि विपुलरत्ननकीजानी ॥
 छंद अनेकन परम सुहावन । ते जलचर विचरतजगपावन ॥
 रघुपति कथा प्रबंधविशाला । श्वेतद्वीप सोइ लसत रताळा ॥
 लक्ष्मीनारायण सियरामा । रामसखा पारपद ललामा ॥
 लषण सेव सोइ अहिपतिसेजू । निवसत सुखित नाथअतिनेजू ॥
 भरत शत्रुसूदन अतिरूरे । राजत शंख चक्र नहिं दूरे ॥
 दोहा—यमकअनेकनभांतिके, विलसत वारिजवृंद ॥

मुख्यप्रगटशृंगाररस, उदितसुपूरणचंद ॥ २१ ॥

तहँ त्रिकूट सोइलसतत्रिकूटा । सुखद सरोवर लंक अटूटा ॥
 साधु विभीषण वसतेहिमाहीं । दशगल ग्राहग्रस्यौ तेहिकाहीं ॥
 बाण चक्रते दशमुख मारी । रघुपति श्रीपति लियो उधारी ॥
 सीयसुधा हित अतिश्रमधारी । वानर निशिचर सुरहुसुरारी ॥
 तिन संगर मंदर अतिभारी । विक्रम मंथन लेहु विचारी ॥
 सीता शोक हलाहल जाना । किय मारुति महेशतेहिपाना ॥
 कुंभकरण वधकौस्तुभभासी । लियो राम वैकुंठ विलासी ॥
 रावण मलयुद्ध गजराजू । लियो सुरेश ताहि कपिराजू ॥
 विजय इंद्रजित वारुनिताको । लियो असुर राक्षस करिसाको ॥
 कहुँकहुँविजयनिशाचरकीन्हा । सोइ वाजी रावण बलिनीन्हा ॥
 कीरति कटी अपसराकेती । वादर विबुध लियो तहँ तेती ॥

रचव सेतुको सुयशप्रकाशा । सोइशशिउदितत्रिलोकअकाशा ॥

दोहा—मारुतिऔषधिल्याइजो, बांदरलियौजिआइ ॥

बढ्यौसुयशसोइशखहै, सुनिधुनिशत्रुपराइ ॥ २२ ॥

श्रवणकामतरु सोहतनीको । पूरणकरत मनोरथ जीको ॥
दियोअगस्त्यधनुपहरिकाहीं । सोइधनुकढ्यौविदितचहुँवाहीं ॥
सीतहिं सीखदियो सुखदानी । सोत्रिजटा सुरधेनु बखानी ॥
विजैरमा निकसीछविधामा । वरच्यौ विशेष मुकुंदहि रामा ॥
जनकपुरुषलै सीयसुधाको । निकस्यौविमलसुयशजगजाको ॥
रावण असुर छीनलैगयऊ । रघुपति मोहनि गवनत भयऊ ॥
वालिराहुतहँकलुछलकीन्यो । रामरमापति तेहिशिरछीन्यो ॥
सीयसुधा रघुपतिलैआयो । कपिनिशिचरसुरअसुरलड़ायो ॥
करिअशोककपिविबुधसमाजू । दीन विभीषण इंद्रहि राजू ॥
वैनतेय चढ़ि पुहुप विमाना । कियौ अवध वैकुंठ पयाना ॥
जैजै रामायण पयसागर । मज्जत भुक्ति मुक्तिप्रद नागर ॥
वालमीकप्रियव्रतमतिस्वंदन । चालितकरि विरच्यो जगवंदन ॥

दोहा—रामायण सत वेदवपु, रघुपतिपद दातार ॥

दीरघशरणागतिमुखद, मोसमअधमउधार ॥ २३ ॥

हरिअवतार अपारहैं, तिनमें कछू न भेद ॥

जहँजहँयश हरिजनचह्यौ, भेतहँतसकहवेद ॥ २४ ॥

जौनभक्त राच्यौ जिहिरूपा । सोइ उपासक तासु अनूपा ॥
पै सब रूपनते जगमाहीं । रामकृष्ण लीला अधिकहीं ॥
ताते रघुपतिके पदवंदी । अब यदुपतिपद नमो अनंदी ॥
जययदुनाथ अनाथन नाथा । जिहिनसाथकेउतिहितुमसाथा ॥
दीनन सुरतरु ऋषितनधारी । धर्मनिधर्म वाटिका वारी ॥
बूढ़त भवनिधि नावनिवाहक । निगुणिनके तुमहींगुणगाहक ॥

संत सरोजनि सूरज साँचे । अधम उधार लीक त्रेणांचे ॥
गो दुजतृणपालक घनश्यामा । दीन मीन सागर अभिरामा ॥
द्वेष दोष दुख तूल वयारी । विघन गहन वनदीह दवारी ॥
मन रसीलके सुधा सरूपा । आमय पीन हीन रसभृपा ॥
भक्ति विराग ज्ञान तरुके फल । दयासलिल डारक अखंडनल ॥
कंचन मानस गंडाकि पाहन । मोहिंसम पंगुनके निरवाहन ॥

दोहा—अव वंदौ प्रभुकृष्ण वपु, लीला नामहुँधाम ॥

जिहिमुमरतवरणतजपत, वसत नशतजगकाम ॥ २५ ॥
रूपमाधुरी यदुपति केरी । कोटिनकाम सुछवि जेहिचेरी ॥
शारद नारद शेष महेशा । व्यासादिक मुनि और अशेषा ॥
वरणतकोउ पायो नहिं पारा । नितनित नवनवकियो विचारा ॥
होत न जड़ पषाणते कोऊ । पघिलिउठत परसतपद सोऊ ॥
तिमि तरुगण जड़वेदवखाने । परसत फूलि फले हरियाने ॥
गवनतनिकटरुकतिसरिधारा । मोहतमृग जोवत जिहिवारा ॥
पामर जाति अहीरि अयानी । महामोह माया लपटानी ॥
कबहुँ न श्रवणकरीश्रुतिगाथा । रह्यौ न कोउ सज्जनकहँ साथी ॥
ते यदुपतिकर रूपनिहारी । भ्रात मातु पति पुत्र विसारी ॥
क्षुधा तृषा नींदहुतजि दीन्ही । अनिमिपनैनपानछविकीन्ही ॥
जातिगवाँरि भोजकी दासी । कुवरीभई रूपकी आँसी ॥
पतिव्रता माथुर दुजनारी । तेउनिरखततन सुरतविसारी ॥

दोहा—सुरनरमुनिजापरपरचौ, कृष्णरूपको जाल ॥

फँसेमीनमानससकल, कटे न कौनेउ काल ॥ २६ ॥

वंदौश्रीनँदलालकी, लीलाललितविशाल ॥

गाइगाइतरिहँमनुज, यहिहितकरीकृपाल ॥ २७ ॥

तासु अंत कोऊ नहिं पायो । शेष शंभु सहसनयुग गायो ॥

रच्यौपुराण सप्तदश व्यासू । उपपुराणतिमि कियोप्रकासू ॥
 औरहु देवसिद्धि ऋषिनाना । विरच्योस्मृतिविविधपुराणा ॥
 सवालक्ष भारतकिय व्यासा । तदापि न पूरी मनकी आसा ॥
 तव नारद उपदेशहि पाई । रच्योभागवत अतिहरषाई ॥
 कियो निरूपण परमधर्मको । त्यागवखान्योप्रवृत्तिकर्मको ॥
 जवहरिकिय यदुकुलसंहारा । श्रीविकुंठको गवन विचारा ॥
 बैठअकेले तरतरु राई । तवमित्रासुत निकटसिधाई ॥
 कीन्ह्यो विनय दुखितकरजोरी । बारबार यदुपतिहिं निहोरी ॥
 जानचहो तुम अब निजपुरको । धारी कौन धर्मके धुरको ॥
 परमधर्मको को उपदेशी । हमहिंअधार कहा अरिकेशी ॥
 तव यदुपति बोले मुसकाई । ग्रंथरूप हम रहब सदाई ॥

अथ भागवतको कृष्णरूपवर्णन ॥

दोहा—यहभागवतस्वरूपमम, मित्रानंदसुजानु ॥

यातेअधिक न औरकहु, मुक्तिमार्गकोमानु ॥ २८ ॥
 वंदौ श्रीभागवत अनूपा । जो मुरारिको अहै सरूपा ॥
 प्रथमहि प्रथमऽस्कंध लसंता । चरण गुगलते जानु प्रयंता ॥
 नखश्रेणी अध्याय सुहावन । रोमसुखदअसलोकसुपावन ॥
 नारद व्यास कथा तलपादू । तिमिअंगुरी अवतारत्रयादू ॥
 गुलफ सुनारद कथाजनमकी । ऐड़ीकथा सुपांडुसुतनकी ॥
 उभैचरण नूपुर छविटेरी । अस्तुतिकुंती भीषमकेरी ॥
 और परीक्षित कथासुहाई । हरिकी पादपीठिसो भाई ॥
 ऊरूते अरु कटि परयंता । वर्णतहै दूतिय मतिवंता ॥
 हरिकोभक्ति विधान जे गायो । सोपीतांबर शुभपहिरायो ॥
 नारद अरु विरंचि संवादा । छुद्रघंटिकाप्रद अहलादा ॥
 तहैं भागवत अनुष्टुपचारी । वर्णरतनयुत गुच्छउचारी ॥

नाभी है तृतीयअस्कंधू । रोमावली, विदुर परंवंधू ॥

दोहा-पुनिश्रीयदुकुलकी कथा, जानु यज्ञ उपवीत ॥

कथाविश्वउत्पत्तिकी, त्रिवलीवेदप्रणीत ॥ २९ ॥

पुनिवराह अवतार सुवादा । कपिल देवहूती संवादा ॥

उभयपार्श्व जानहु प्रभुकेरे । उदर चौथ अस्कंध निवेरे ॥

पँचरंगकुसुम तुलसि वनमाला । दक्षप्रजापतिकथा रसाला ॥

उत्तरीयपद ध्रुव अख्याना । प्रभु पृथुकथा मुक्तिजग जाना ॥

कथाप्रचेतन परमसुहाई । मधिनायक शोभा अधिकाई ॥

उरपंचमदिय निगम निवेरी । प्रियव्रतकथा लता भृगु केरी ॥

ऋषभकथा कौस्तुभ निरधारो । भरतकथा श्रीवत्स उचारो ॥

भू खगोलको कथन महाना । प्रभु युगलस्तन मंडलजाना ॥

पुनिछठवां स्कंध सुहावन । वर्णत कंठनाथको पावन ॥

कंठाभरण अजामिलगाथा । वृत्रकथा कंठी धृतनाथा ॥

चित्रकेतुकी कथा सोहाई । सोमल्लिका माल छविछाई ॥

सप्तम लसत वदन प्रभुकेरो । हरिणकशिपुवध दंतनिवेरो ॥

दोहा-वर्णन वर्णाश्रमनको, प्रभुरसनाई साँच ॥

नयनप्रयंतहिजानिये, अष्टम अतिमनराँच ॥ ३० ॥

गजमोचन नासिका सोहावन । कथमन्वंतर त्रिकुटीपावन ॥

कच्छपवपु वर्णनदृगवामा । दक्षिण वामनकथन ललाँमा ॥

प्रभुकटाक्ष देवासुर संगर । वरुनी वर्णन मत्स्यरूपकर ॥

भ्रुकुटी कर्ण कपोल प्रयंता । भनत नवमस्कंध सुसंता ॥

इलाकथा प्रभु वाम कपोला । अंबरीषकी दछिनअमोला ॥

रघुकुलकथन भ्रुकुटिप्रभुएकू । तिमि द्वितीय निमिवंश विवेकू ॥

यकश्रुति पुरुरवाकी गाथा । द्वितीय ययातिकथा सुखसाथा ॥

यक कुंडल पुरु अनुकोवंशा । द्वितीयसुनृप यदुवंश प्रशंसा ॥

भक्तमाला ।

दशमअंग दशमहिको जानौ । बालचरित तहँभाल बखानौ ॥
रास विलास तिलक प्रभुकेरो । कथाविरहव्रज अलक निवेरो ॥
उत्तरार्द्ध प्रभु मुकुट बखाना । बहुलीला बहुरतन महाना ॥
स्तुति वेदाशिषा प्रभुकेरी । एकादश मन लेहु निवेरी ॥

दोहा—योग विराग विज्ञान अरु, भक्तिकथा मनहारि ॥

येही जानहु नाथके, हैं भुज सुंदर चारि ॥ ३१ ॥

दशइंद्रिय निग्रह सविधाना । सो प्रभुकी अंगुली प्रमाना ॥
तेते इंद्रिय विषय विहाई । मन हरिमहँरत पानि गनाई ॥
विद्या और अविद्या भाषन । प्रभु अंगदध्यावहु अभिलाषन ॥
भिक्षुक गीता दिव्य विभूती । नाथमूंदरी मोद प्रसूती ॥
पुनि द्वादश आतम प्रभुकेरो । तहँ ऐसो करिलेहु निवेरो ॥
कदन कलुष कलिचक्र प्रचंडा । गदा सुनृप उपदेश अखंडा ॥
सर्पसत्र जनमेजय केरो । है भगवान कृपानति वेरो ॥
मार्कण्डेय कथा जो गाई । पांचजन्यसों लीजै ध्याई ॥
भानुकथा अरु कथन पुराना । प्रभुशारंग करहु अनुमाना ॥
यहिविधि श्रीभागवत अनूपा । वंदौ शिर धरि यदुवररूपा ॥
तुमहीं हौ सतभांतिअधारा । तुमहि विनाको करी उधारा ॥
मेधादेहु मोहिप्रभु विमली । रचहुँ रामरसिकनकी अवली ॥

दोहा—अब वंदौ यदुनाथको, कृष्ण नाम अभिराम ॥

जाहिभनतलहिहैं लहत, लहेकृष्णको धाम ॥ ३२ ॥

सकृतहु आननकृष्णनिकारत । तापर प्रणअसकृष्णउचारत ॥
भेदि सलिल जिमि कटत सरोजू । ऐंचहु जनन नरकते रोजू ॥
कहत कृष्ण उरअंतर आवै । जन्मकोटि बासना नशावै ॥
कृष्णनाम जगमें सुखसारू । संत समाज वृक्षफल चारू ॥
सुकृत सुमंदिर कलशअनूपा । बहुसाधन नृप माधि मनुरूपा ॥

दानव कलुष चक्र गोविंदा । सज्जन कुमुद मुशारुद चंद्रा ॥
 पापिन पावन सुरधुनिधारा । कुमति दामकद नोक्षणआग ॥
 हरि रति अंकुरवर्द्धकनीरा । मोहमंवास विमर्दक वीग ॥
 विविधभक्तिसमसुभगपरागा । जातरूप मद लोभ सोदागा ॥
 मनमहेश वाटिका विहंगा । काम कोह नम तोनपनंगा ॥
 मायाकंस विधंस मुरारी । दारिद वारिद प्रवल वयारी ॥
 हरि निष्ठा तियभूषण भारी । मुक्ति भवनसो पानउचारी ॥

दोहा—जेती पापनदहनकी, शक्तिनाममें होइ ॥

तेतोकरि नहिंसकतहै, पाप पातकीकोइ ॥ ३३ ॥

अवबंदौ यदुनाथके, धामपरम अभिराम ॥

ध्यावत निवसतहोतहठि, जनमनपूरणकाम ॥ ३४ ॥

वंदौ श्री वृंदावन जादू । हरिहिं न जान देत यकपादू ॥
 वंदौ श्री यमुना सुखदाई । गोपुर विधिमुख श्रुतिकदिआई ॥
 वंदौ मधु मधुपुरी सुहावनि । पंकज पुहुमि मध्यलस पावनि ॥
 वंदौ द्वारावति मानस गिरि । विलसतदिनकरयदुवरफिरिफिरि ॥
 वंदौ गोपुर शशिमुखसारा । कृष्ण सार जहँ कृष्णविहारा ॥
 वंदौ ब्रजधरणी की धूरी । भव रुज वश कहँ जीवनमूरी ॥
 वंदौ ब्रजवनिता छविभूरी । माधव मत्त मयूरम पूरी ॥
 वंदौ नंदयशोमति दोऊ । जिनसमान धनिधरणि न कोऊ ॥
 वंदौ पुहुप सकल ब्रजकुंजें । जहँ माधव मधुकर नित गुंजें ॥
 वंदौ वृन्दाविपिनि कुरंगा । हरिछविछके कुरंगिनि संगी ॥
 वंदौ खगब्रजविपिननिवासी । ब्रजपति रूप राशिके आसी ॥
 वंदौ श्रीनंदनलालसखनको । जिन उछाहनितकृष्णलखनको ॥

दोहा—वंदौक्षीरधिदेवकी, जहँ प्रगट्यो हरिचंद ॥

फैली कीरति कौमुदी, रसिककुमुद आनंद ॥ ३५ ॥

नमो विटप वसुदेव ललामा । फरचो सुफल यदुपतिवलरामा ॥
जयति रोहिणी सीपसुहाई । उपज्यो अमल मुकुतवलराई ॥
जय वसुदेव अठारहरानी । श्रुति सम अर्थ गदादिकदानी ॥
जयउद्धव यदुनायकसाजन । ज्ञान विराग भक्ति जल भाजन ॥
जयति अक्रूर मानसरभारी । पूरित हरिसनेह वरवारी ॥
जय कूवरी दूवरी दुखकी । श्याम तमाल लतासमसुखकी ॥
जयसरोज मथुरा नरनारी । परफुल्लितलखि कृष्णतमारी ॥
जयसांदीपिन विशद बजारू । विद्यारतन विलास अपारू ॥
दै गुरुमृत सुत मोलमहाना । भये रतनग्राहक भगवाना ॥
जयवायक विसुकरमासांचो । निज निपुणता कृष्ण अंगराचो ॥
जयजय उग्रसेन सुखवाढा । कंस नक्र हनि हरि जेहि काढा ॥
नौमि नौमि नभमास सुदामै । सुमनमाल धनुदिय वनश्यामै ॥

दोहा—अब वंदौं बलरामको, धरणि धर्म आधार ॥

कुंदइंदुपारदप्रभा, सकुची अंगुलिअकार ॥ ३६ ॥

दुवनमत्त दंती मृगराजा । पुहुप अंड धारण गजराजा ॥
डीलधराधर शील निधाना । ज्ञान विज्ञान विधान पुराना ॥
दानवअचल विदारन गाजू । सुजन मोदकर संतसमाजू ॥
यदुकुलनखत निशाकरपूरण । द्विविदवालि रघुवर करचूरण ॥
नाग नगर पद्मिनि दलवाऊ । बलवल खल अपमान पसाऊ ॥
रामभराजिव गहन तुषारू । अदिति रोहिणी वामन चारू ॥
सुकुत सुफल शरणागत केरे । दीन मीन जलराशि निवेरे ॥
विजय प्रकाश करणदिनराजू । अहि खल खंडन करखगराजू ॥
वैष्णवमतसुरधुनिविधिलोकू । नारद हरण अज्ञानज शोकू ॥
सुमतिमृष्टिकरनिपुणविधाता । विघन नशोहर विमलप्रभाता ॥
रेवति युक्ति आधार कवीशा । भक्ति उमा भूषित गिरिईशा ॥

पालन पैज प्रजा पृथुराज । जय बलभद्र अभद्र दुगाज ॥

दोहा—अब वंदौ प्रद्युम्न प्रभु, सुंदर कृष्णकुमार ॥

जेहिमिलि मेख्यो अतिदुसह, शंभुशापकोमार ॥३७॥

वीरधीर धनुधर शिरताज । जयगतिरमण रूप रसराज ॥

वज्रनाभ महिभार सुरारी । शंवर प्रवल त्रिपुर त्रिपुरारी ॥

बहुरि करों अनिरुद्धहि वंदन । यदुनंदन नंदनको नंदन ॥

यदुकुलकटक सुविजै पताका । मदनलाडिलो शूरन साका ॥

वंदौ श्रीसात्यकी अनोखो । दारुण दुवन विदारण चोखो ॥

नाथ मनोरथ रथवर चाका । कृष्णसखा धृति धुरधरधाका ॥

यदुकुलसागर नमौ उजागर । बढत निरखि यदुनाथ निशाकर ॥

वंदौ कुंडिन कंतकुमारी । विश्वअखिल छविनेशिउजियारी ॥

वसुधाधिप विदर्भपति सागर । सृज्यो सुधारुकिमणी उजागर ॥

असुर देव पन्नग सब भूपा । हरणहेतु तैंह जुरे अनूपा ॥

द्विजकटू अनुशासनपाई । पन्नगारि गमन्यो यदुराई ॥

भूप सुरासुर गर्व उतारी । हन्यौ सुधा भीषमक कुमारी ॥

दोहा—सतिभामा वंदनकरौं, सतिभामा सम नाहिं ॥

विजयदेव द्रुम हरलता, मूरिप्रकट जगमाहिं ॥३८॥

वंदौं कालिंदीपद दोई । तपगुणगहिवशकिय प्रभुजोई ॥

वंदौं अवधअधीशकुमारी । दैविक्रम वसु वन्योविहारौ ॥

जयभद्राय दुपाति महरानी । पतिव्रत सुखद रतनकी खानी ॥

नौमि जांबवति पदरज पावनि । सांव सोप मणि सीपसुहावनि ॥

नमो लक्ष्मणापद अरविदा । नृपमदमोदि हन्यौ यदुचंदा ॥

नमो मित्रविंदा महरानी । यदुपतिचरण सेव रंग सानी ॥

वंदौं श्रीरेवतिपदकंजू । रोहिणितनय मोदप्रद मंजू ॥

षोडशसहस नाथ महरानी । वंदनकरौं जोरि युगपानी ॥

औरहु यदुकुल सतीमनाऊं । जिनप्रसाद सुंदरिमति पाऊं ॥
 बाल युवा वृद्धहु यदुवंशी । वंदन करहुँ सकल सुरअंशी ॥
 यहंविधि यादवकुलहि प्रणतिकरि । औरहु वंदन करउँ मोदभरि ॥
 दायकज्ञान विराग निदेशू । वंदौ शिरधरि गौरि महेशू ॥

दोहा—अब वंदौ करजोरिकै, जग सिरजक करतार ।

राम कृष्ण पद कमल युग, जाको सदा अधार ॥३९॥
 जाको करि भरोस रघुराजू । वंदत भवकी भक्तसमाजू ॥
 रचित रामरसिकनकी अवली । चाहत पावनमति अतिअमली ।
 संतसमाज सुधा जगमाहीं । जावत कलिमलमृतक न काहीं ।
 संतसमाज विदित सुरसरिता । रघुपतिभक्ति वारिवर भरिता ॥
 संतसमाज विकुंठनिसेनी । गमनत जाहिं मुमुक्षुनि श्रेनी ॥
 संतसमाज देवतरु साँचो । याचत करत विशेषि अयाचो ॥
 संतसमाज वरन तरुमूला । निगमागम जिहिं शाखअतूला ॥
 संतसमाज रूप यदुपतिको । सुमरत सेवत दायकगतिको ॥
 संतसमाज कृपाण करेरी । करतविजयकलिमल अरि केरी ।
 संतसमाज सुआकरजानी । रत्नविज्ञान भक्तिकी दानी ॥
 संतसमाज शरद उजियारी । पातक तिमिर तोम अपहारी ॥
 संतसमाज सजीवन मूरी । नमौं तासुपद धरि शिर धूरी ॥

दोहा—भवनिधि सुखद जहाज सोइ, केवट केशव तासु ।

मोसम अधम अनेकजन, तरणचहत अनयासु ॥४०॥
 भगवत और भागवत दोऊ । कहत समान सुमति सबकोऊ ॥
 वेद पुराण संहितन माहीं । महिमा अमित अनूप सोहाहीं ॥
 विनासंतपद सेवन, कीन्हे । कोउनहिं हरिस्वरूपसति चीन्हे
 जहँ जहँ जाको मिले मुरारी । हेतुसंतपद सेव विचारी ॥
 ताते भगवत भक्तिहु तेरे । संतभक्ति वरवेद निवेरे ॥

दलमधि पारथसों हरिभाषा । करन जो मोहि मिलन अभिलाषा ॥
साधन करत जन्म बहु बीते । लहत परमगति जगत अर्भाते ॥
पै यकजन्महिं महँ बहुतेरे । मिल मोहिं जग सुयश उजरे ॥
सो सब साधु सेव परभाऊ । राममिलन नहिं आन उपाऊ ॥
यह साधन अतिसरल विचारो । कहहुँ सकल जो मुनो हम्मरो ॥
प्रथमकरै सज्जनका संग । तब कछु रंगत रामकरंगा ॥
होति तबहिं हरिनामहिं प्रीती । जेप निरंतर तजि जग भीती ॥
नामप्रभाव कथा रुचि होई । जेहि जानन यदुपति सब कोई ॥
दोहा—कथा सुधा श्रुति अंजली, करत पान दिन रैन ।

लीला धाम स्वरूपहु, जानत ह्वे मति ऐन ॥ ४१ ॥

तव सर्वस जानत मनमार्ही । साधुसमान और कोउ नार्ही ॥
तन मन धनते संतसमाजू । सेवत जानि आपनो काजू ॥
निष्ठा दया शांति तब होवै । जन्म अनेकनि पातक खोवै ॥
तब हरियश वर्णत दिन राती । सुरत लगति हरिमहँ सब भाँती ॥
बाढ़त अधिक अधिक अनुरागा । कहवावत जगमहँ बड़ भागा ॥
जगत सुरति छूटति क्षणमार्ही । कामादिक शठ चोर पराहीं ॥
बाढ़त सज्जन संग प्रभाऊ । मिलत धाय तेहि यदुकुलराऊ ॥
यहविधि सहज परमगति पावै । पुनि न कवहुँ संसृतमहँ आवै ॥
यही सत्य करि लेहु विचारा । विनहरि संतन कवहुँ उवारा ॥
भगवतचरित कथन अतिसोहा । पै नमिटत मानस कर मोहा ॥
जो भागवत चरित्र बखाना । माया मोह तुरंत पराना ॥
सकल शास्त्र सिद्धांत यहीहैं । लोकहुँमहँ यह प्रगटसहीहैं ॥
दोहा—सोइ विचारि हरि गुरु कृपा, मतिमोरिहु अतिथोरि ।

लगी कृष्णगाथा कथन, कविउक्तिन कहँ चोरि ॥ ४२ ॥

श्रीभागवत कृष्णकर रूपा । देवगिरा गुरु परम अनूपा ॥

रच्यो तासु भाषापरबन्धू । औरहु कछुक कथा सम्बन्धू ॥
 भयो बग्यालिस सहस सोहावन । सादर सुनत रसिकजन पावन ॥
 सो सब जानहु मोरि ठिठाई । चढ़ किंपिपील मेरु शिरजाई ॥
 पैसंतनपद रज धरि शीशा । बारहिं बार वंद जगदीशा ॥
 संत चरण कछु भाषण चाहौं । मतिअनुसार ताहि निरवाहौं ॥
 प्रथम साधुमहिमा अब ताते । भाषणचहों मिटै भ्रम जाते ॥
 साधु करत सबको उपकारा । साधु सरिस नकोउ संसारा ॥
 दोष कछुक नहिं मोको देहैं । विगरहु मम सुधार सतिलेहैं ॥
 साधुचरण रज शिरमें धारी । विरचौं संतचरित सुखकारी ॥
 मंगल रूप मंगलाचरणा । यहिहेतु मैहूं यहि वरणा ॥
 महिमा संतनकी जगमाहीं । वरणिपार गवनै कोउ नाहीं ॥

सोरठा-शिष्टाचार विचारि, मानि मोद मंगलप्रदै ॥

हरि गुरुचरण सँभारि, हरिगुरुको वंदन करों ॥१॥

दोहा-गुरु हरि रूप मुकुंद पद, वंदौं बारहिंवार ॥

जाकैं बल उतरन चहों, यह दुस्तरसंसार ॥ ४३ ॥

म्वहिंअधारदूसर कछुनाहीं । नैननयक गुरुपद दरशाहीं ॥
 गुरुपद सरिस न द्वितियदयाला । विलुलकसकलकलुषकलिकाला
 म्वहैंसम अधम अयान अयोगू । पायो राम नाम सुखभोगू ॥
 होत नमहि मुकुंद अवतारा । तो मोसम मतिमंद गँवारा ॥
 तारतको न जलधि जगधोरा । कौन बुझावत नंदकिशोरा ॥
 हरि गुरु श्रीमुकुंद गुण गाथा । आगे कछु कहिहौं सुखसाथा ॥
 अब हरि गुरु पितुपद नति करहूं । जासु भरोस सदा उर धरहूं ॥
 सुमति सुमंगल मुद करतूती । शील साहिबी शरम सपूती ॥
 इनको मूल पिता नति जानो । मोर निहोर कछू नहिं मानो ॥
 जस करतूति सुदान सुभाऊ । धर्म वीरता भक्ति प्रभाऊ ॥

रचनकाव्य आदिक गुण जेते । औ सन्मान गान गुण केते ॥
रहे अपूरव मो पितु केरे । लाज होति वर्णत मुख मेरे ॥
दोहा—पै वसुधामें विदित सो, ताते कहत न लाज ॥

करिहौंमैं आगे कथन, जहँ कलि भक्त समाज ४४॥

रामरसिकावलीग्रंथके नियम ॥

रामरसिकावली महँसोहा । द्वादश चौपाई पर दोहा ॥
कहुँ कहुँ छंद मनोहर रीती । आदि अंत साधुनपर प्रीती ॥
चारि खंड ग्रंथहिं परमाना । कृत त्रेता द्वापर कलि जाना ॥
युग युगके भक्तन आख्याना । युग युग खंडनलिर्योविधाना ॥
यक यक भक्तन कथा प्रयंता । विमल सकल अध्याय लसंता ॥
कहुँ विशद कहुँ लघु विस्तारू । जस जेहि भक्त कथासुखसारू ॥
भक्तमाल नाभाजू केरी । प्रियादासकृत टीका हेरी ॥
तामें जो संक्षेप बखाना । सो कछु विस्तर करौं प्रमाना ॥
भक्तमाल वर्णत मुखमाहीं । अपरकथा जे संत कहाहीं ॥
लिखिहौं तेऊ मैं यहि माहीं । पूछि पूछि सब संतन पाहीं ॥
भये संत जेऊ यहि काला । कहिहौं तिनहुँन चरितविशाला ॥
देखी सुनी जौनहै मेरी । कहहुँ ग्रंथ महँ सकलनिवेरी ॥
दोहा—संवत उनइससैचतुर, दशसावन सितपर्व ।

रचन रामरसिकावली, कियो अरंभ अगर्व ॥ ४५ ॥

नाभानिर्मितयदपिविशाला । अहैअनूप भक्तकी माला ॥
कछु नप्रयोजन यहि निर्माणा । तदपि कियो मैं अस अनुमाना ॥
ग्रंथ प्रपन्नामृत मनहारी । चरित सुदिव्य सूरि सुखकारी ॥
औरहु भार्गव जौन पुराना । तिनमें संतन चरित बखाना ॥
ते समय नहिं भक्तमालमें । भनितरहे जे वही कालमें ॥
नाभासरिस न कोउ जगमाहीं । वरण्यो साधुचरित्रनि काहीं ॥

जय नाभा गुरुबुद्धि विशाला । मोपर कृपा करहु यहिकाला ॥
 नाभा चरण धूर शिरधरिकै । वरणोंसाधुचरित सुखभरिकै ॥
 जय जय प्रियादास गुरुचरणा । भक्तमालटीका जिन वरणा ॥
 करहु दया मोपर प्रियदासू । कथनचहौंकछु संत विलासू ॥
 जीव. चराचर भुवन निवासी । वंदौं सकल कृष्ण जिनवासी ॥
 नित्यानंद भये एक साधू । संतचरित सोरच्यो अगाधू ॥

दोहा—तिनहुनकोमत लै कछुक, विरचौं संतचरित्र ॥

पूर्वाचार्यनकी कृपा, मानि सकल जगमित्र ॥ ४६ ॥

इति सिद्धश्रीमहाराजाधिराज सीतारामचंद्रकृपापात्राधिकारीमहा-
 राज बांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
 राजा बहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजूदेवविस्-
 चितायां श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडेवदनावर्णनप्रथमोऽध्यायः १

अथ सत्ययुगके भक्तोंकी कथा ॥

दोहा—भक्तिरूप रसपंच विधि, प्रियादास जो कीन ॥

भक्तिरसामृत सिंधुमें, सो विस्तृत कहि दीन ॥ १ ॥

औरहु जेते भक्ति प्रकारा । द्वादशनवरस पंच विचारा ॥
 नौसत्ताइस और इक्यासी । भक्ति भेद जे आनंदरासी ॥
 यहिविधि औरहु वस्तु विचारो । भक्तिरसामृत सिंधुनिहारो ॥
 अरु भक्तनके लक्षण जेते । लिख्यो भागवत महँ पुनितेते ॥
 सोमैं नाहिं इत कियो उचारा । जानि भीति ग्रंथहि विस्तारा ॥
 केवल भक्त चारि युग केरे । तिनके जेहैं चरित वनेरे ॥
 सोई मात्र कथौं यहि माहीं । कछुक कथा उपयोगिन काहीं ॥
 सतयुग भक्तन प्रथमहिगाऊं । तिन में विधिको प्रथम गनाऊं ॥

अथ ब्रह्माजीकी कथा ॥

एक समयविधि आसन माहीं । बैठरहे ध्यावत प्रभुकाहीं ॥
तहँ नारद मुनि तुरत सिधारे । धातहि ध्यावत नैन निहारे ॥
तब मनमें अति विस्मयकीन्हो । इनहि जगतपति हमचितचीन्हो
ये अब करत कौनकर ध्याना । असविचारि पूछौ मतिवामा ॥

दोहा—ध्यावत जगत तुमहिंसकल, तुमध्यावहुकेहिकाहिं ॥

देहु बताइ विशेषि मोहिं, बूझि परत कछु नाहिं ॥१॥

मुनि नारदके वचन सुखारे । तजि समाधि विधि नैनउधारे ॥
बोल्यो विहँसि सुनहु मुनिराई । जेहिहम ध्यावाहिं ध्यान लगाई ॥
वाहीके माया वश जीवा । कहत जगद्गुरु मोहिं अतिवा ॥
म्वहिंसमविधिशिवसहसविलोचन । प्रगटत पालत नाशत रोजन
ईश एक सोइ और अनीशा । भजौं ताहि मैं पद धारि शीशा ॥
असकहि नारद सों बहु भाँती । हरि उपदेश दियो बहुराती ॥
करि नारदकी विदा विधाता । सोचनलग्योफेरि विलखाता ॥
भ्रमवशजन मोहिंजानतस्वामी । जानत नाहिं स्वामी खगगांमी ॥
अससोचत यदुपतिकहँध्याई । दियो विरंचि समाधि लगाई ॥
बैठसमाधि वित्यो बहुकाला । भई तहाँ नभगिया रसाला ॥
तप तप सुन्यो शब्दबड़भागा । चौंकि चहुंकित चितवन लागा
देख्यो कोऊ कहुँ कित नाहीं । तासु अर्थ सोच्यो मनमाहीं ॥

दोहा—करत महातप विपिनमाधि, चलोगयो करतार ॥

तहँ अखंड लागी सुरत, यथा तैलकी धार ॥ २ ॥

तहँ भावनाकरत मनमाहीं । पूजत हरिपद पंकज काहीं ॥
प्रगट भयो हरिधाम समेता । कमला संयुत कृपानिकेता ॥
मिले सप्रीति बहोरि बहोरी । कह्यो नाथ आज्ञा करु मोरी ॥
रह्यो जगत पूरुब तस कीजै । यथाभाग लोकन करि दीजै ॥

विधिकहैं प्रभु विरचत बहुकाया । ज्ञान घटी बाढ़ी तब माया ॥
 किहिविधि होइ मोर उद्दारा । का अनुशासन होत तुम्हारा ॥
 कह्यो मुकुंद मंद मुसकाई । जनत जगत तोहि भ्रमन सताई ॥
 धरि मेरो शासन निजशीशा । रचहु जगत परजनके ईशा ॥
 कृष्ण शिषापन धरि शिरधाता । रच्यो जगत जसपूरुबख्याता ॥
 पुनि जब बढ़्यो भूमि करभारा । तासु उतारन कृष्णविचारा ॥
 लीन्हो यदुकुल महँ अवतारा । लगे चरावन वत्स अपारा ॥
 विहरत ब्रजमहँ निरखि मुरारी । ग्वाल बाल सँग परम सुखारी ॥

दोहा—अवलोकन लीला ललित, आयो नभ करतार ।

निरखि साँवली माधुरी, मूरति रसिकअधार ॥ ३ ॥

ग्वाल बाल हरि सखा पियारे । वेणुविषानलकुटकरधारे ॥
 विहरत यमुना पुलिन मझारी । हरि बाँसुरी बजावत प्यारी ॥
 खेलत हरिसँग खेल अनेका । स्वामी सेवक कौन विवेका ॥
 जक्यो विरंचि गन्यो धनिभागा । पुनि उपजो अतिशयअनुरागा ॥
 मनमहँ लग्यो विचारन भूरी । हम शिवजेहिपदधारहिधूरी ॥
 सो प्रभु खेलत गोपन माहीं । इनसम कोउ धरणी धनिनाहीं ॥
 महा भागवत, गोकुल गोपा । हरिहित जगतनेह कियलोपा ॥
 गोप वत्स पदरज शिर धारहुँ । कौनेहु भाँति धाममेंडारहुँ ॥
 धामसहित तौ मैं धनि होऊँ । जनमअनेकदुरितद्युति खोऊँ ॥
 अस विचारि मन परम प्रवीना । विरच्यो तृणतेहिविपिननबीना ॥
 चरत चरत बछरा कटि दूरी । चरणलगे सोइ तृण सुखभूरी ॥
 तब यदुपतिनिजभोजनत्यागी । ल्यावनहित बछराअनुरागी ॥

दोहा—ल्याऊँ बछरन सखनठिग, लिहेपाणिमें कोर ।

फेरनहित कछुदूरिलौं, कीन्हो यदुपतिदौर ॥ ४ ॥

सोइअंतर विरंचितहँ पाई । हरचो बाल बछरा सुखछाई ॥

लै अपने पुर पदरज झारयो । पुरजनसहित शीशनिजधारयो ॥
 पुनि देख्यो इत हरि कहैं आई । तैसे बाल बत्स समुदाई ॥
 ब्रजवासी बछरा अरु बालक । तिनको पदरज अति भ्रम बालक
 सो संप्रीतिविधिं शिर धरि लीन्हो । तासु प्रभाव प्रगट हरि कीन्हो ॥
 अपनी दिव्य विभूति दिखाई । कोटिन जन्म जो ध्यान न आई ॥
 बालक बत्स रहे तहैं जेते । चारु चतुर्भुज सोहत तेते ॥
 नारायण के रूप विशाला । रमा सहित शोभित तिहि काला ॥
 पुनि जब येक रूप प्रभु भयऊ । तब धाता समीप चलि गयऊ ॥
 अस्तुति कीनी विविध प्रकारा । नायो पद शिर वारहि वारा ॥
 दीन्हो बालक बत्स बहोरी । कह्यो पूर आशा भै मोरी ॥
 यदुपतिसम को कृपानिधाना । मोहिं दरशायो रूप महाना ॥

दोहा—यहिविधि विधिके बहुत हैं, चरित पुराण न माहिं ।

सो केहिविधि मैं लिखि सकौं, वर्णन नाहिं सिराहिं ॥५॥

इति श्रीसिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचंद्रक-
 पापात्राधिकार श्रीरघुराज सिंहजूदेव विरचितायां श्रीरामरसिका वं-
 त्यांसत युगखंडे ब्रह्मचरित्रवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ नारदकी कथा ॥

दोहा—अब वर्णौं नारद कथा, महाभागवत जोइ ।

जासु पुराणनमें चरित, प्रगट कहत सबकोइ ॥ १ ॥

यक हरिभक्त विप्र मतिवाना । रह्यो कौनहूं विपिन महाना ॥
 तहैं आषाढमास नियरान्यो । वर्षागम सबको दरशान्यो ॥
 तब विहरत वसुधा सुखछाये । सनकादिक तेहि कुटी सिधाये ॥
 तिनको करि सतकार सुधारी । राख्यो विप्र मासहू चारी ॥
 रही एक पूरुवते दासी । ताको पुत्र रह्यो मतिरासी ॥

सो सनकादिक सेवनमाहीं । विप्र लगायो बालक काहीं ॥
 सेवत मुनिन सुनत हरिगाथा । बालक नितहि नवावत माथा ॥
 मुनि विलोकि बालकसेवकाई । देह जूठ नित ताहि बुलाई ॥
 संत उछिष्ट खात तेहिकेरी । बढी भक्ति मुदमंगल ठेरी ॥
 रामचरण युग प्रेम महाना । दिन दिन दून दून अधिकाना ॥
 करिकै कृपा मुनीश सुतंत्रा । दियो बाल कहि माधव मंत्रा ॥
 वर्षागई शरदऋतु आई । चले मुनीश कृष्ण गुणगाई ॥

दोहा—जबते मुनि गवने अनत, तबते बालक सोइ ॥

गोविंद गुण गावत बितत, निशिदिन विहँसत रोइ ॥
 येक समय रजनी अधियारी । डस्यो व्याल बालक महतारी ॥
 जननी जब सुरलोक सिधारी । तब बालक अति भयो सुखारी ॥
 निकसि चलयो गोविंद गुण गावत । विपिन अकेले अति सुखपावत ॥
 विकसित वारिज रह्यो तड़ागा । तेहि तट बैज्यौ भरि अनुरागा ॥
 श्रीरघुवीर चरण अरविदा । निज मानस करि दियो मिलिदा ॥
 जब प्रभु अपनो रूप दिखायो । चितचकोर शशि सुछवि छकायो ॥
 पुनि कीनो वपु अंतर्ध्याना । तब बालक अतिशय अकुलाना ॥
 व्याकुल बुद्धि निमेष उधारा । गगन गिराभै सुखद अपारा ॥
 मिलिहौं द्वितिय जन्म महँ तोहीं । तैं बालक अतिशय प्रिय मोहीं ॥
 यह मुनि विरह विवश मतिधीरा । तज्यो तुरत आपनो शरीरा ॥
 पुनि विधि गोदहिं ते प्रगटान्यो । नारद नाम जासु जगजान्यो ॥
 महाभागवत दीन सनेही । हरि उपदेश कियो नहिं केही ॥

दोहा—देखिदशाहरिजननकी, प्रेमविवशभरिकंठ ॥

देन ओरहनो आसुहीं, गवनत भयो विकुंठ ॥ २ ॥
 कह्यो नाथसों दोउ करजोरी । सुनु चितदै विनती प्रभु मोरी ॥
 तेरो गुण गावत सुखसारा । मैं प्रतिदिन विचरौ संसारा ॥

मनुज उपासक देवन केरे । सुख संपति युत लख्यो घनेरे ॥
 जे जन जौनहिं देव उपासैं । ते सुर तासु विपति दुख नासैं ॥
 ह्वै प्रत्यक्ष असकरहिं बखाना । मनवांछित माँगहु वरदाना ॥
 जोइ माँगत सो इ पावत आसू । तिय सुत धन महि विभव विलामू
 पै प्रभु जे अनन्य तोहिं ध्यावैं । कबहुँनते तोसों कछु पावैं ॥
 दीनमलीन हीन सब भाँती । माँगत भीख फिरत दिन राती ॥
 यह अचरज मोहि देखि नजावै । दुनीदीन तुव दास कहावै ॥
 तेतो त्रिभुवन केरअधीशा । मिटत सकल दुखनावत शीशा ॥
 मुनि नारदके वचन सुहावन । बोले विहँसि पतितके पावन ॥
 यह म्वाहिको नारद दुख भारी । जौन कही तू बुद्धि विचारी ॥
 दोहा—सबदेवनके दास जे, ते सुख संपति पूर ॥

मोरदास मम आशकरि, रहत जगतरस झूर ॥ ३ ॥

कहाकरौं नारद नहिं दोष । देनचहौं तिय सुत महि कोशू ॥
 भलभल कहौं माँगु मन जोई । पै माँगत मोसों नहिं कोई ॥
 बिन माँगहुँ बरवस जो देहुँ । तो नहिं लेत भाँतिते केहुँ ॥
 कहाकरौं यह अति पछिताऊँ । नारद तुमहिं उपाय बताऊँ ॥
 सुनत मुनीश कह्यो मुसकाई । यह कत कहहु बात यदुराई ॥
 जो तुम देहु तो कस नहिं लेहीं । सुखआशा जगमें नहिं केहीं ॥
 वचन मोर जो मृषा विचारो । देन हेत किन तुरत सिधारो ॥
 दीन्हेहुँ पै न लेहि जो दासा । छुट्यो तुम्हार दोष अनयासा ॥
 प्रभु कहैं चलि मुनि देहु बताई । चलिहौं मैं तुम सँगु अतुराई ॥
 तब मुनिनाथहिं तुरत लेवाई । आयेव्रजधरणी महँ धाई ॥
 निरखि साधु यक कह मुनि राई । देखु दास अपनो यदुराई ॥
 कुंजगली विच बैठ मलीना । वीन्योशिलाक्षुधावश छीना ॥

दोहा-पंथाके कंथा किते, अपने हाथ बटोरि ॥

लैकाँटा पुनि पुनि सिअत, फटत बहोरि बहोरि॥४॥
 देखिं नाथ ऐसो निजदासू । तासु समीप गये चलिआसू ॥
 पीतांबर दिय ताहि वोढाई । चौकिउठचोचितयो यदुराई ॥
 परममाधुरी मूरति प्यारी । गदा चक्रधर असि धनुधारी ॥
 युग अवलंब लंब भुजचारी । बदन कोटि शशिप्रभा पसारी ॥
 नवनीरद तनु श्याम सुहावन । मंदहास आनंद उपजावन ॥
 भूरि विभूषण भूषित अंगा । नारद खडे नाथके संगी ॥
 कह्यो मुकुंद मंद मुसकाई । मांगहु साधु तुमहि जोभाई ॥
 जो माँगिहो तौनहीं देहैं । विन दीन्हे इतते नहिं जैहैं ॥
 हरिके वचन सुनत सुखदाई । बोल्यो साधु मंद मुसकाई ॥
 लाला तुम माँगे नहिं दैहौ । जानि परत मोसों नटिजैहौ ॥
 भाषहु जो प्रण रोपित्रिवारा । तौ मनवांछित सुनहुहमारा ॥
 देव देव हम देव विशेषी । कह्यो नाथ मन अचरज लेखी ॥
 दोहा-कह्यो साधु कर जोरिकै, यही देहु घनश्याम ॥

यह झगरा में मतिपरो, मतिआवहु तजिधाम ॥ ५ ॥
 चिरकुटसियत देखि तेहि नाथा । धरिदीन्हो पीतांबर माथा ॥
 यहू गहव हम नहिं अस भाषी । दियो फेंकि चिरकुट मनभाषी ॥
 साधु दैशालखि कृपानिधाना । नारद ओर ताकि भगवाना ॥
 कह्यो कहहुका हम यहि दीजै । दीन्हेहु पै नलेत काकीजै ॥
 दशा कृष्ण दासनकी हेरी । मति मुद उदधिमगन मुनि केरी ॥
 ताहि साधु कहैं बहुत बखाना । पुनियदुपाति संग कियो पयाना ॥
 जब गोविंद निजधाम सिधारा । मुनि विचरन लाग्यो संसारा ॥
 बोन बजावत हरिगुण गावत । निशिदिनरामरूप रति भावत ॥
 करत अनेकनजन उपदेशा । प्रेममगन विचरत बहु देशा ॥

माया मोहित मनुज विशेषी । उपदेशहु पै ज्ञान नदेखी ॥
गयो बहुरि वैकुण्ठधामको । जहँ निवास नित सिया रामको ॥
कह्यो जोरि कर सुनहु खरारी । तुवमाया वश जीव दुखारी ॥
दोहा—देखत नहिँ संसारमें व्याल सरिस यह काल ॥

नहिँ उपाय कछु करत जेहि, मिटै जगतजंजाल ६ ॥
यह दुख मोहिँ लागत अति भारी । देहु उपाय बताय विचारी ॥
कह्यो नाथ मोहित मम माया । तजन जीव चाहत नहिँ काया ॥
यह अनादि सम्बन्ध विचारो । संतसेव गुरुहेतु उधारो ॥
मृषा मानु तौ चल जग माँहीं । जगततजन कहियो कोउ काहीं ॥
कह मुनि सत्य कहहु यदुराया । हमहूँ लखन चहैं तुव माया ॥
जाहु देवऋषि देखन सोई । मममाया कौतुक जो होई ॥
चल्यो मुनीश मही महँ आयो । विचरन लाग्यो अति सुख छायो ॥
फिरत फिरत इक नगर सिधाय्यो । बनिक वृद्धयक तहाँ निहाय्यो ॥
रहे तीन सुत अरु षटनाती । तिमि धन धाम विभव सब भाँती ॥
नात कुटुंब और परिवारा । पूरण रहे अनेक प्रकारा ॥
गुणि तेहि बनिक वृद्ध मन माहीं । करहिँ अनादर सब तेहि काहीं ॥
सांझ चना चावन कहँ देहीं । सुत सुतवधू न तासु सनेही ॥
दोहा—फटे पुराने वसन तेहि, देहि विते बहुवार ॥

ताकन हित बैठाइ तेहि, राखहिँ घरके द्वार ॥ ७ ॥
नैनमंद पगचलि नहिँ जावै । आवत जात नारि गरि आवै ॥
करहिँ बाल सिरत लहि प्रहारा । कहहिँ याहि यमराज बिसारा ॥
बनिक दशाइमिनारखि मुनिशा । कियो विचार सुमिरि जगदीशा ॥
यहिसम दुखी न कोउ जगमाहीं । यह तजिहै निजते जगकाहीं ॥
असविचारितेहि निकट सिधारी । बनिक बुझावत गिराउचारी ॥
बूढ़ भये कर पद दृग मंदा । देहि सकल कुलके दुख दंदा ॥

हम लै चलहिं विकुंठहिं तोको । तोहिं देखि दाया भै मोको ॥
 वनिक सुनत नारद के बैना । बोलयो माषि लाल करिनैना ॥
 जाहु जाहु तुमही मुनिराई । हमका करव विकुंठहिं जाई ॥
 घरतकिहैं को जो हम जैहैं । कहैं सुत सुततिय सुत सुत पैहैं ।
 वनिक वचन सुनि फिरे मुनीशा । कह्यो धन्य माया जगदीशा ॥
 वनिक मरचो पुनिलहिकछुकाला । भयो ताहि घरमहिषविशाला ॥
 दोहा—भूरि भारि भरगोनिमें, तासु पुत्र तेहिलादि ।

गवनहिं दूरि विदेशकहैं, देहि न तेहिअन्नादि ॥
 श्रमितचलै नहिं तव अति कोहैं । अरई तासु नितवै पोहैं ॥
 कहूँ उठि चलत गिरतपथ माँहीं । क्षुधा तृषावशनिशिदिन जाहीं ॥
 ऐसी दशा देखि तेहि केरी । नारद आइ कह्यो पुनि टेरी ॥
 अबहूँ चलु विकुंठ मतिमंदा । अहै तोहिं अब कौन अनंदा ॥
 महिष योनि भारित अतिभारा । तापर ताडत तोर कुमारा ॥
 कह्यो महिष तब मुनिसों कोपी । हम नहिहैं विकुंठ के चोपी ॥
 जो हम अब विकुंठ को जैहैं । सुत केहिलादि विदेशसिधैं ॥
 फिरे वचन सुनि अस मुनिराई । मरिगो महिषकाल कछुपाई ॥
 भयो श्वान पुनि तेहि घरकेरो । द्वारे वीतत सांझ सवेरो ॥
 पुत्र पौत्र जब निकसत खाई । टूका दैदेवैं दुरिआई ॥
 कबहुँ प्रवेश करत घर जबहीं । मारहिं नारि लुकेठन तवहीं ॥
 देखि दशा अस पुनि मुनिराई । जाइ श्वान ढिगगिरा सुनाई ॥

दोहा—अबहुँ चलो वैकुंठको, अब दुख बाकी कौन ।

क्षुधा छामतनु कंडुबहु, कसनहि छाँड़हु भौन ॥ ९॥
 नहिजैहौं विकुंठ कह श्वाना । मोहिं महादुख तजतमकाना ॥
 आवहिं राति चोर घर मेरे । चारों पहर करों घर फेरे ॥
 भूँकि भूँकि निज सुतन जगाऊँ । यहविधि आपन ऐनवचाऊँ ॥

जो हम अब विकुंठको जैहैं । चोर चोराइ सवैधन लैहैं ॥
 नारद फिरे फेरि सुसकाई । श्वान मीच कछुदिनमहँ पाई ॥
 भयो तासु नरदा को कीरा । भक्षत मलहु मूत्र नहि पीरा ॥
 तब नारदमुनि तहँ पुनिआये । कछुककोप असवचनमुनाये ॥
 तोहिं धिग धिग पामरमतिमंदा । अबहुँनछोड़त जगकरफंदा ॥
 भयो कीट मलको सुखहीना । तदपि होतनहिं मोहविहीना ॥
 अबहुँ चलु विकुंठ को पापी । तोहिं करौं मैं आसुअतापी ॥
 कह्यो कीट तब म्वाहिं सुखभारी । जीवहुँ निजपरिवारनिहारी ॥
 सुनत वचन पदवसि मुनिराई । लैगो तिहि विकुंठ वरियाई ॥
 दोहा—मैं जगते इकजीवको, मायाबंधन छोरि ।

ल्यायो नाथ समीप तुव, अस कह मुनि कर जोरि १० ॥
 नाथकह्यो निजते नहिंआयो । तुमहत्याकरि वरवसल्यायो ॥
 माया मोहित जीव अनेकू । जगत तजन चितचहत ननेकू ॥
 भाग्यवशात पाय सतसंगा । सुधरतसकल होत जग भंगा ॥
 यहि विधि नारद कथा अपारा । वरणि कौन पायो कवि पारा ॥
 सदा प्रसन्न साधु सब पाहीं । कोपहुँ मंगल हेतु सदाहीं ॥
 विहरत धनदकुमार तड़ागा । निकस्यो तहँ नारद बड़भागा ॥
 नारी देख पहिरि पट लीन्हो । धनदपुत्र नहिं कछुचित दीन्हो ॥
 जड़ता जोहि दीन्ह मुनि शापा । होहु विटपब्रजके विन तापा ॥
 हरि लैहैं यदुकुल अवतारा । करिहैं अवशि तुम्हार उधारा ॥
 नारद शाप प्रगट परभाऊ । तिन उधारकीन्हो यदुराऊ ॥
 सो प्रसिद्ध भागवत पुराना । ताते मैं संक्षेप बखाना ॥
 नारदचरित पुराणन माहीं । वर्णहिं सिद्ध मुनीश सदाहीं ॥

दोहा—ताते कह्यो न मैं बहुत, कथा अनोखी दोइ ॥

लिख्यो राम रसिकावली, समुझि संत सुख होइ ११ ॥

इति श्रीराम०स०खं नारदकथावर्णनोनामतृ०ध्यायः ॥ ३ ॥

अथ शिवजीकीकथा ॥

दोहा—भनों बहुरि शिवकीकथा, सकल पुराण प्रसिद्ध ॥

भक्ति शिरोमणि जाँहि नित, नवहिं देव मुनि सिद्ध ॥१॥
 शिव सम कौन दीन हितकारी । परहित पियो हलाहल भारी ॥
 ज्ञान विराग भक्ति अरु योगू । करत सदा जनहित उत योगू ॥
 जगमंगल हित बड़ तप करहीं । राम नाम निशि दिवसउचरहीं ॥
 धन्यो सती सीताकर रूपा । तेहि त्याग्यो यदि प्रिया अनूपा ॥
 एक समय गौरी शिव दोऊ । चढ़े वृषभ सँग गण सब कोऊ ॥
 चले करत पुहुमीकर फेरा । देख्यो एक ठाम युग खेरा ॥
 उतरि तुरत नंदीते ईशा । कियो प्रणाम धारि माहि शीशा ॥
 पुनि चढ़िनंदी चले पुरारी । पाणि जोरि तब शैलकुमारी ॥
 अतिशंकित बोली अस बैना । केहिं प्रणाम कीन्हो सुख ऐना ॥
 भन्यो शंभु मंदहि मुसकाई । सुनजेहि कियो अणत शिरनाई ॥
 यहि थल विते सहस दशशाला । भयो एक हरिभक्त विशाला ॥
 दुती खेरमहँ सुनहु पियारी । हैहैं कृष्ण भक्त रतिधारी ॥

दोहा—ताते दूनहुँ खेरको, सादर कियो प्रणाम ॥

कृष्णभक्तको भक्तमैं, सत सेवन मम काम ॥ २ ॥

इति श्रीरा०सतयुगखंडेशिवचरित्रवर्णनोनामचतु० ॥ ४ ॥

अथ सनक, सनंद, सनातन, सनत्कुमारकी कथा ॥

दोहा—जय भागवत प्रसिद्धजग, सनकादिक जिननाम ॥

मंत्र हरिस्मरणंसदा, जपत रहत वसु याम ॥

विधि मनते सनकादिक जाये । तुरतै यहिविधि वचन सुनाये ॥
 सृष्टिकरो जग पूरण हेतू । मानहु मम शासन मतिसेतू ॥
 तब सनकादिक वचन उचारो । मायाफंद गले नहिं डारो ॥

करिहैं हम हरि भजन सदाहीं । मनिहैं तिहरो शासन नाहीं ॥
 असकहि परम धर्म अनुरागे । पंचवर्षकी वय वड़ भागे ॥
 विचरहिंजग उपदेशहिंकारन । कबहुँ न जात धनिनके द्वारन ॥
 पै पृथुको गुणिराम सनेही । आये कहन दशा जसदेही ॥
 कह्यो बुझाय सुनाय सभाको । परमधर्म सब भन्यो सदाको ॥
 सनकादिक सम कोउनाहिं भयऊ । कबहुँ न माया वश मन गयऊ ॥
 यदपि कृष्ण प्रेरण वश ज्ञानी । जयविजयहिंदिय शाप महानी ॥
 तदपिनाथ सों पुनि अस भाष्यो । नरक हमहिंइनको बहिराखो ॥
 बार बार प्रभुसों पछिताने । तब हरि कारण सकल बखाने ॥
 दोहा—और प्रसिद्ध पुराण में, सनकादिककी गाथ ॥

मैंकहँलों वर्णनकरों, पुनि पुनि नावहुँ माथ ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्योसतयुगखंडेसनकादिकचरित्र
 वर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ कपिलदेवकी कथा ॥

दोहा—अब मैं वर्णन करतहों, कपिलदेव इतिहास ॥

देवहूतिसों प्रगट है, कीन्हो सांख्य प्रकाश ॥ १ ॥

केवलपरहित जिनअवतारा । अविनि अनेकन अधम उधारा ॥
 कह्यो मातुसों ज्ञानविरागा । नाहिं संसार माँह मनलागा ॥
 कर्दम तपकृत भोगविलासा । सुरदुर्लभ छोड़्यो अनयासा ॥
 अबलों गंगासेवन करहीं । जन उधार हितअतिश्रमभरहीं ॥
 सगरयज्ञको तुरंग चुराई । बाँध्यो कपिल निकट सुरराई ॥
 सकल सगर सुत साठिहजारा । हय हेरनदित जबहिं सिधारा ॥
 कपिलहिजानि चोर दुति धाये । मुनिमन हर्ष विषाद नलाये ॥
 अपनेहि पाप भये जरिछारा । सगरसुवन जे साठिहजारा ॥

साधुद्रोहजे ठानहिं प्रानी । तिनहिं होत पावक इव पानी॥
 जरहिं पतंग सरिस अनयासू । साधुसदा बिन सोच हुलासू ॥
 कपिलदेवको देखि प्रभांऊ । दियो सुथल निजते सरिराऊ॥
 भगवत भक्तनकहैं जगमाहीं । जड़हु करहिं सत्कार सदाहीं ॥
 दोहा—दशो दिशा मंगल लहै, जड़ चेतन अनुकूल ॥
 सब थल देखै नाथनिज, लखै न कोउ प्रतिकूल ॥२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडेकपिलदेवचरित्रवर्णनं
 नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ मनुराजाकी कथा ॥

दोहा—मैं वरण्यों संक्षेप यह, कपिलदेव इतिहास ॥

अब यह मनु महाराजकी, कहों कथा सहुलास ॥१॥

ब्रह्मतनयभे मनु महाराज । रामभक्त निज सहित समाजा॥
 उदय अस्त निजशासनफेरचो । पाप प्रचंड डण्डसेपेरचो ॥
 धरचो धर्म धुर धरणि मझारी । मातु समान तक्यो परनारी ॥
 एक समय विचरत महिमाहीं । गयो सुकर्दम भवन जहाहीं ॥
 देवहूति सँग रही कुमारी । शतरूपाशानी छबिवारी ॥
 लखि आदर अतिकर्दमकीन्हा । कंदमूल भोजनहित दीन्हा ॥
 हरिशासन गुणि मुनितपधारी । देखो देवहूति सुकुमारी ॥
 अतिलजित असगिराउचारी । देहुमोहिं महाराज कुमारी ॥
 नृपदुहिता मुनिव्याह अयोगू । पैगुणि मुनिकर भूप नियोगू ॥
 दियो सुता नहिं अनुचितदेख्यो । द्विजहित निज सर्वस गुणलेख्यो
 देवहूति हरिभक्त महानी । पति मूरति हरिमूरति जानी ॥
 पतिसेवत कृशतनुहै गयऊ । तदपि न कछु विषादउरभयऊ॥

दोहा—अस्थि चर्म भरितनु रह्यो, रहिगे केवल श्वासं ॥

तदपि न पतिसेवन करत, तनको बख्यो हुलास ॥
देवहूति सम नहिं कोउनारी । यह जगमें पतिसेवनकारी ॥
दैदुहिता मुनिको सुखछाये । लौटिभूष निजसदन सिधाये ॥
नृपके भे सुत युगल धर्मरत । लघु उत्तानपाद गुरु प्रियव्रत ॥
प्रियव्रत होतहिं नारद आये । परमारथ उपदेश बुझाये ॥
मुनि उपदेश तीरसमलाग्यो । जगतमृगयगुणिप्रियव्रतभाग्यो ॥
मंदर कंदर रह्यो दुराई । राम कृष्ण मुखते रटलाई ॥
सुतवियोग लखि मनु महाराजा । वृथाजानि अपनो सब काजा ॥
गये विरंचि समीप सिधारी । कह्यो पौत्रतुव भो तपधारी ॥
सुनत भूष भाषित चतुरानन । चले चटिक प्रियव्रत जेहि कानन ॥
मनु विधि नारद प्रियव्रत चारी । परमारथकी गिरा उचारी ॥
मनुकह जग यहअजित अराती । समिटि लरैं हम तुम सब भाँती ॥
गृह गढ़ धारि लरौ तुमजाई । हम विरक्त मैदान लराई ॥

दोहा—यहिविधि हम दोउ जितब जग,है कछु संशय नहिं ॥

जो विरक्त अबहीं भये, किमि जितिहो जगकाहिं ॥
हैंहों अबहिं विरक्त जुप्यारे । तो हैंहैं सब प्रजा दुखारे ॥
नीति सनातन यह श्रुतिगाई । सुतहिराज्यदै पितुवनजाई ॥
तुमहुँ सुतहिदै राज्यकुमारा । वनगवनहु लहिकै सुखसारा ॥
हम तुम्हारबदि वनमहँ ऐहैं । तुमऐहौ तब परपुर जैहैं ॥
यहि विधि कह्योविधातहुताको । प्रियव्रत भो तब प्रभु वसुधाको ॥
मनु महाराज करन तपलागे । रामचरण अतिशय अनुरागे ॥
तेइससहस वर्ष जब बीते । तबहुँ न तपसों भूपति रीते ॥
देव देन वरदान सिधाये । मनु महाराज न कछु मनलाये ॥
तब निजजन प्रण पूरण हेतू । रामसिया युत कृपानिकेतू ॥

खड़े भये मनु सन्मुख आई । भूपति गयो सुकृत फलपाई ॥
 कह्यो नाथ मांगहु वरदाना । नृपति कह्यो हेकूपानिधाना ॥
 होहुनाथ तुम पुत्र हमारे । बालचरित हम लखहिं तिहारे ॥
 दोहा—एवमस्तु करुणायतन, कह्यो माथ धरिहाथ ॥
 सोइ दशरथ भूपति भयो, यहिविधि मनुकी गाथ ॥ ३ ॥
 इति श्रीरामरसिकावल्यांसतयुगखंडे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ प्रह्लादकी कथा ॥

दोहा—अब वर्णौ प्रह्लादकी, कथा मनोहर जोइ ॥
 जासु सरिस नहिं भक्त कोउ, कहहिंसंत सबकोइ ॥ १ ॥
 दितिसुत दैत्य उभयबलवाना । हिरनकशिपुहिरणाक्ष महाना ॥
 काननकियो जाइ तप भारी । ह्वैप्रसन्न भाष्यो मुखचारी ॥
 माँगु माँगु दानव वरदाना । तुम सम किय न कोउ तप आना ॥
 असकहि छिरकिकमंडलुनीरा । कियोतासु अति पुष्टशरीरा ॥
 माँग्योवर असुरेश विचारी । तुवकृत सृष्टि नमीचु हमारी ॥
 एवमस्तु तब विधि कहिदयऊ । दानव जीति सकल सुर लयऊ ॥
 जबदानवनि करचो तपहेतू । तब सब सुर बाँध्यो असनेतू ॥
 दानवनि लै लूटि सब लीन्हे । असुरन हनिनिकासि सब दीन्हे ॥
 हिरणकशिपुकी जो इकनारी । लै सुरपति तेहि चल्यो सिधारी ॥
 नारद मिले आइ मगमाहीं । गर्भवती देख्यो तियकाहीं ॥
 काकरिहो पूछ्यो मुनिनाथा । कह्यो सुरेशजोरि युगहाथा ॥
 याके गर्भ माहि रिपुमोरा । ताको वध करिहौं यहिठोरा ॥
 दोहा—मुनिहि दया उपजो अतिहि, सुरपतिको समुझाय ।
 लैगमन्यो निज संगतिय, निज आश्रममें आय ॥ २ ॥
 नारीउदर भागवत जानी । किय उपदेशहि ज्ञान विज्ञानी ॥

जब तप करि लौक्यो असुरेशा । तब पुनि जाय तुरंत निवेसा ॥
 पुत्रसहित नारी कहँ दीन्हो । असुर अदोष मानिछै लीन्हो ॥
 महाभागवत सोइ प्रल्हादा । सजनको दायक अहलादा ॥
 त्रिभुवन जीति असुर जब आयो । बालक निरखि परमसुख पायो ॥
 कविसुत असुर वंशगुरुआमा । पंडामर्क रह्यो असनामा ॥
 कह्यो असुरपति तिनहिं बुलाई । मोवालाक कहँ देहु पढ़ाई ॥
 पंडामर्क बोलि प्रह्लादै । लगे पढ़ावन आसुरवादै ॥
 पढ़ै नवाल रटै मुखरामा । करै गुरूशिक्षन वसु यामा ॥
 नीतिशास्त्र जब गुरू पढ़ावै । तबप्रह्लादहि ताहि सिखावै ॥
 नीतिशास्त्र मन तुमहुँ नदेहू । करहु राम पद पंकज नेहू ॥
 विहँसे गुरू सुनि बालक बानी । सिखवैमोहिं शिष्य जनुजानी ॥

दोहा—कह्यो वचन तबशक्रसुत, असन पढ़हु सुखलेखि ।

जो सुनिहै दानव अधिप, तौ कोपिहैविशेषि ॥ ३ ॥

असकहि आसुर विद्या केरो । दियो पाठगुरुसहित निवेरो ॥
 गयो अनत गृहकारज हेतू । बालक बोलि तवै मतिसेतू ॥
 लग्यो सुनावन कृष्ण प्रभाऊ । नवधाभक्ति सुधर्म स्वभाऊ ॥
 बहुरि बालकन कह्यो कुमारा । स्वप्नसरिस जानहु संसारा ॥
 बिन हरिभक्ति न मंगलहोई । सत्य सत्य जानहु सब कोई ॥
 छीजति छन छन आयुर्दाया । कोटिनदिये न पुनि कोउ पौया ॥
 जेक्षण कृष्ण भजनमय जैहैं । तेई सकल सफलहठि हैहैं ॥
 हरिके होहु अनन्यउपासी । तब पैहौ बालक सुखराशी ॥
 नतौजियत भोगिहो कलेशा । मरे पायहो दंडविशेषा ॥
 रामकृष्ण गोविंद मुरारी । रसनारसनि यही सुखकारी ॥
 कालव्याल वागत सबशीशा । परै नजानि करतका ईशा ॥
 मायामोहित जीव अनेका । करत न कछु जगमाहिं विवेका ॥

दोहा—जो मुख संपाति साहिबी, करन चहौ दुहुँ लोक ।

तौ अनन्य रघुवरवचन, भजहुवालबिनशोक ॥ ४ ॥

सुनप्रल्हादवचनभ्रमवालकं । रामभजनलागे सब बालक ॥
 पंडामर्क बहुरि पुनि आये । देखि दशा अतिशय दुखपाये ॥
 बोले सकल बालकन माषी । यहका पढ़हु सबै मुखभाषी ॥
 कौन सिखायो तुम्हें कुनीती । मानहु नाहि मोहिं कछुभीती ॥
 बोले बालक एकहि वारा । हमहि सिखायो भूपकुमारा ॥
 तब प्रल्हादहि कह्यो रिसाई । यहविद्या तोहिं कौनसिखाई ॥
 तब प्रल्हाद कह्यो मुसकाई । राम प्रसाद गुरू हम पाई ॥
 तुमहुँ भजौ हरि दीनदयाला । वृथा परे जगके जंजाला ॥
 बहुरि कह्यो गुरु जो हारि कहिहै । तौ परचंड दण्ड शिशुलहिहै ॥
 कह्यो सकल बालकन बहोरी । जोहरि कही त्रासतेहि मोरी ॥
 असकहि गृहकारजहित गयऊ । पुनि प्रल्हाद कहत असभयऊ ॥
 करहि गुरू विद्याहित त्रासा । तुमहि नदंड देनकी आसा ॥

दोहा—जोकरिहौ तुम हरिभजन, तो प्रसन्नगुरुहोइ ।

मोसों कह्यो एकांतमें, अस जानहु सबकोइ ॥ ५ ॥

कृष्णभजत पावहु जो दंडा । तो हम जामिन हैं वरिबंडा ॥
 गुरु अभिलाष मोरि भरिजानी । तुमहि अयान गुणतगुरुज्ञानी ॥
 सुनि प्रल्हाद वचन यहिभाँती । लगेभजन पुनिहरिदिनराती ॥
 गुरू आइ अस दशा निहारी । हायहाय कहि भयो दुखारी ॥
 गहि प्रल्हाद पाणि तेहि काला । लैगमन्यो जहँ असुरभुवाला ॥
 देखि पुत्रको दानवराई । लीन्हो मुदित अंक बैठाई ॥
 कह्यो पढ़हु जो पढ़हु कुमारा । तबै वचन प्रल्हाद उचारा ॥
 कृष्णभक्ति पितु पढ़ा हमारी । जो भवकानन दहन दमारी ॥
 शत्रु मित्रहै कोउ जगनाहीं । व्यापित राम सकल जगमाहीं ॥

कठिन कराल अहै संसारा । विन हरिभजे न होत उवारा ॥
पिता त्यागि तुमहूँ जग आसा । होहु राम पदपंकज दासा ॥
बालवचन सुनि दानवराई । मानि मृषा मनहँस्यो ठठाई ॥

दोहा—पंडामर्कहिं पुनि कह्यो, कोउममारिपुजन आय ।

सिखयो मेरे पुत्रको, एकांतहिं लैजाय ॥ ६ ॥

लैबालक गमनहु गृहकाहीं । सावधान अब रहहु सदाहीं ॥
कोउ बालकहि न सिखवन पावै । करिछल हरि निज दूतपठावै ॥
नृपति वचन सुनि गुरुगहिवालै । गये बहुरि मोदित निजआलै ॥
लगे पढ़ावन आसुर विद्या । जाहि वेद सब कहत अविद्या ॥
सुनि गुरुपाठ कहै मुसकाई । गमकृष्ण यदुपति यदुराई ॥
सुनि असवचन गुरू अतिमाषैं । काह बकतरे शिशु असभाषैं ॥
गृहकारजहित जब गुरु गवने । कहहिंशिशुनसुमिरोसियवरने ॥
पावहिं पढ़न न आसुर ज्ञानू । तमनहिप्रविशअछतजिमिभानू ॥
यहिप्रकार बतियो कछु काला । देखिदशा गुरु भये विहाला ॥
अतित्रासित करि कह प्रल्हादे । रेशठ तोहिं भयो उन्मादे ॥
अब हम तोहिं नहिं नेकुपढैहैं । मारिकसा नृप ढिग लैजैहैं ॥
असुरनाथ हमको अनखाहीं । निजसुत ढंग जानते नाहीं ॥

दोहा—असकहिकसाप्रहारकिय, सोप्रल्हाद शरीर ।

कुसुमसरिस अतिसुखदभै, नेकुभईनहिंपरि ॥ ७ ॥

पकरिबाहु भूपतिढिग आये । पंडामर्क कोप अति छाये ॥
आशिष दै अस वचन उचारा । यह बालककुलचहतउखारा ॥
मानतनहीं नेकु ममभीती । करत न कछु पाठनपर प्रीती ॥
वरबस बकत विष्णु करनामा । जो तुम्हरो वैरी दुखधामा ॥
लेहु लाल अपनो महाराजा । हमनहिं करब गुरू करकाजा ॥
हमहीं कहैं तुम दोष लगैहौ । बालक कहँनहिं त्रासदेखैहौ ॥